औरत और सपने

सईद अमृत

अनुवादक
विजय गोपाल श्रीवास्तवा
B. A. (BHU)

प्रकाशक :
पैरामाउन्ट पब्लिशिंग
को० ई० सो० लिमिटेड
2950 कटरा खुशहाल राय
दिल्ली—६

•

1961

मूल्य 2/8

•

मुद्रक :
सुमन प्रेस
दिल्ली

AURAT AUR SAPNE SAYEED AMRIT

जिन्दगी क्या है क्या बताऊं मैं
एक दीवाने का खाब हो जैसे,
या किसी सूदखार बनिये का
उलझा उलझा हिसाब हो जैसे।

इस उपन्यास के सारे व्यक्ति,
स्थान आदि कल्पित हैं—पब्लिशर, लेखक
या अनुवादक किसी से समानता होने पर उत्तरदायी नहीं है

पथरीली पहाड़ियों की गोद में बसे हुए एक छोटे-से ग्राम का जीवन ! जहां के वातावरण में जादू बसा देने वाले मधुर अलापों मे आह भी होती और वाह भी होती। दिल में पैदा करने वाली उन्मादक चहल-पहल भी होती।

चुनार की ठण्डक, खेतों मे जाफरान की महक, जिन्दगी की लहक और कुमारियो की ठुमक-ठुमक चाल ही तो उस ग्राम का जीवन था।

शहर के गगन-चुम्बी भवनों में निर्माण होने वाले बनावटी जीवन से अलग-थलग उन छोटे-छोटे पथरीले मकानों मे साफ़-सुथरी मानवता नाच रही थी।

मेल-जोल मे मस्त सीधे-सादे देहाती अपनी वादी मे आनन्द-विभोर थे। मेले और त्योहारों पर मनचले नवयुवक एक-दूसरे का हाथ थामे उस छोटी-सी दुनिया मे प्रसन्नचित्त नाचते। कुमारियां झूले मे जोबन का भार लिये देहाती गीत गाती। जीवन प्रसन्नता, प्रेम और प्रीत के सागर में डूबा-हुआ बीत रहा था।

इन्हीं पहाड़ों से घिरे गांव में शाह जी की लड़की नीलम जब जवान हुई तो वादी भर मे उसकी सुन्दरता पर टीका-टिप्पणी होने लगी। जब रात में खेतों की रखवाली करने वाले कुछ नवयुवक कहीं इकट्ठे होते तो नीलम की चर्चा अवश्य होती।

नीलम थी भी अति सुन्दर, सैकड़ो में एक, एक कवि की कल्पना थी। गोरे-गोरे सुडौल अंग, लाल-लाल गाल, मद भरे नयन और मतवाली चाल वाली नीलम जिधर से निकल जाती युवक दिल थाम के रह जाते, लेकिन बात करने का साहस किसी को न होता।

सब उसके बाप शाह जी से डरते थे। उन्होंने उस जवार भर के जवानों को, बड़े-बड़े मेलों में, हर बाज़ी में मात दी थी। अब सेहत तो ढल चुकी थी लेकिन दबदबा अब भी छाया था।

नीलम को अपनी उठती हुई जवानी का, अपनी सुन्दरता का आभास था। एक तो वह किसी से बात करते यूंही घबराती, दूसरे बाप का डर भी था। वह दिन-भर वादी में डोलती फिरती, लेकिन किसी दिलजले का साहस नहीं था कि छेड़छाड़ कर ले। कभी इस कुंज में चली जाती, तो कभी उस कुंज से फल तोड़ लाती। मन भर गया तो बाप के पास खेतों पर चली गई या फिर घर लौट आती। पूर्णिमा की रात्रि को आधी-आधी रात तक सखियों के संग पहाड़ी गीत गाते हुए थिरकती रहती।

उसी गांव का एक नवयुवक गुल उस पर बुरी तरह मरता था। गुल भी उससे कुछ कम न था। उभरी जवानी, गोरा रंग, भरपूर मांसपेशियां, भावुकता से भरा हुआ, जिधर से निकल जाता, लोगों की निगाहें उठ जातीं। सचमुच वह गांव में सबसे खूबसूरत नौजवान था।

उसने अपने मित्रों से नीलम की बात छेड़ी लेकिन प्रत्येक ने उसे यही राय दी कि वह नीलम का विचार हृदय से निकाल दे। सब उसके बाप से डरते थे और फिर नीलम ने आज तक किसी की ओर आंख उठाकर नहीं देखा था। ऐसी हालत में उससे निगाह मिलाने की हिम्मत कौन करता!

गुल के दिल-ही-दिल में उसके प्रीत की चिन्गारी सुलग रही थी। कहीं वह दिखाई देती तो रुक जाता और उस समय तक न हिलता जब तक वह आंखों की ओट न हो जाती। उसकी मित्र-मंडली उसकी हंसी उड़ाती लेकिन वह सबसे बेपरवाह अपने प्रेम में मग्न था।

दिन बीतते गये, गुल के हृदय में प्रेम की आग धधकती गई, लेकिन ऐसा अवसर न आया जब वह अपने दिल की लगी सुना सके।

समय के साथ-साथ गुल दिल-ही-दिल में उसे बसाए दिन और रात काट रहा था। जिस दिन नीलम उसे दिखाई न देती, उसके खेत के चक्कर लगाता, द्वार के दर्शन कर लेता, तब तक वापस आने की इच्छा न होती थी जब तक उस पर एक भरपूर निगाह न डाल लेता।

नीलम की आंख में भी गड़ गया था कि एक नवयुवक उसके पीछे लगा रहता है। वह गुल से परिचित थी, पास ही घर था। कई बार देख चुकी थी। मरनी करनी के अवसर पर, मेले-ठेलों में आंखें लड़ी थीं।

कभी सोचती तो शरीर में फुरफुराहट-सी झंझनाहट-सी अनुभव करती, परोक्ष में भी, अगर गुल की मूर्ति का साक्षात्कार होता तो भी शरमा जाती। अपने को अपने ही नयनों में छुपाने का प्रयत्न करती। जब शरीर की प्रतिक्रिया का विनोद जाग उठता, तो लज्जा के आवरण में छुप जाती।

आग सुलग रही थी। एक अवसर-रूपी तिनके की आवश्यकता थी जो लौ पैदा कर दे और प्रेम की ज्वाला भड़के। दो अलग-अलग जलने वाले अपने आपको खोकर, समाज के सारे बन्धनों को तोड़कर एक ही ज्वाला में भस्म हो जाएँ। अपनी लगन को दिल में छिपाये वे रात में तारे भी गिनते और दिलों में बेचैनी भी रहती।

उस दिन सन्ध्या समय गुल अपने कुंज में बैठा मालटों का हिसाब लगा रहा था। कौन-से पेड़ से कितने टोकरे भरे गए। शहर में किस भाव से क्या मिलेगा कि उसे पास ही में पत्तों की कड़कड़ाहट ने कुछ कहा। वह खड़ा हो गया, स्वतः मुँह से निकल पड़ा—कौन है ?

—नी...लम। एक झल्लाया स्वर गूँजा। गुल सुन्न हो गया, चुप्पी-सी लग गई।

—तुम...अकेले

—हाँ

परोक्ष में, एक दूसरे की उपासना करने वाले दो उपासकों की मूर्तियाँ आमने सामने खड़ी थीं। जिनके दिलों में प्रीतम की याद में, रातों के सन्नाटे में उथल पुथल मची थी। दिल भड़क उठे।

—यहाँ क्या करने आई थीं?

—मालटे चुराने। वह मचल उठी।

—यह चोरी कबसे सीखी है?

—मैं जा रही हूँ। मुँह से निकल गया लेकिन जगह से न हिली। गुल घबरा गया कि कहीं चली न जाय। बोल पड़ा

—ठहरो...एक बात सुनो

—पूछो

गुल चकित रह गया इस मिलन पर—सच बताओ किस लिए आई थीं?

—मालटे चुराने। वह चहक उठी।

—आओ...फिर आओ ना

—कहाँ?

—आओ तो सही

वह खड़ी रही। वह सोचने लगा क्या करे, एक क्षण काठ मार गया फिर, नीलम की कलाई पकड़ी। प्यार का सोता फूटा

—आओ ना

कुछ दूर चले दोनों। सामने पेड़ के घने छाँव में मालटे के टोकरियों के ढेर थे। गुल की स्वर लहरी गूँजी

—बैठो, ले लो जितने चाहिएँ, चुराने...

—मुझे नहीं चाहिएँ। वह जल्दी से उठ खड़ी हुई। गुल के हृदय में खल-बली-सी मची।

—तुम चुपके से लेने आई थीं हम अपने हाथों देते हैं

—उंह। वह लजा गई।

—मुझे जाने दो

गुल ने हाथों में हाथ लिया, प्यार से पूछा—मालटे नहीं लोगी ?

—नहीं। वह हौले से बोली। गुल ने ज़रा अपनी ओर खींचा मन चुलबुला उठा

—आई तू मालटे लेने, ले कुछ और जा रही है

—क्या ? वह चमक पड़ी—मैंने कुछ नहीं चुराया

गुल हँस पड़ा—झूठ न बोलो

—तलाशी ले लो

—आओ इधर, तलाशी दे रही हो ना

—हाँ

गुल आगे बढ़ा वह पीछे हटी—मुझे जाने दो

—नहीं सरकार, अभी नहीं

—देर हो गई है मुझे गुल। बड़े मीठे बोल निकले

—सूरज डूबे देर हो चुकी है

गुल को शरारत सूझी—अच्छा, चुराया माल तो वापस कर दो। नीलम मचल गई, कुछ समझ न सकी, चेहरे पर लालिमा आई, त्यौरी चढ़ी

—क्या चुराया है मैंने ?

—मेरा दिल

नीलम ने सर झुका लिया, गुल ने ठोड़ी पकड़ी, आंख मिलाई।

—चुराया है ना

उसे चुप्पी-सी लग गई ।

—चुराया है ना...बोलो

वह कुरते का दामन मरोड़ने लगी, गुल ने फिर छेड़ा

—तुम क्या जानो, यह चोरी तो पुरानी है । वह बैठ गई वहीं चबूतरे पर । गुल भी बैठ गया ।

गुल बिलबिला उठा—यह मालिक की देन है कि तुम आई हो

वह अब भी मौन थी, गुल झुँझला गया

—बोलो नीलम, कुछ तो बोलो

—मैं...मैं तो । वह हकला गई ।

—कहो, कहो

नीलम के नयन उठे, वह झेंप गई—मैं तो मालटे चुराने आई थी

—झूठ

—अच्छा झूठ सही । वह तुनक गई—अब मुझे जाने दो

—फिर कब मिलोगी ?

नीलम ने उठना चाहा, गुल ने हाथ पकड़ लिया, बड़े विनय से बोला बता दो

—पहले मेरा हाथ तो छोड़ो

—और तुम भाग जाओ

—नहीं गुल, नहीं भागूँगी

—क़सम खाओ

—क़सम खाती हूँ

—मेरी क़सम खाओ । गुल ने जिद की ।

—तुम्हारी क़सम

फूल खिल उठे, भावनाओं से भरे सीने मिले, गुल ने दबाया, वह लजाने लगी, वह हंसने लगा ।

—दोबारा आओगी

—नहीं...कल

—नहीं...आज । गुल मचलने लगा ।

—आज बड़ी देर हो गई

—अच्छा । गुल कुम्हला गया, नीलम के कलेजे में कसक उठी

—कल ज़रूर आऊंगी, अभी खाना बनाना है । वह पीछे हटी

गुल निराश हो गया, दिल में एक हूक उठी, चारों ओर शान्ति थी, वातावरण में सन्नाटा था । नीलम जाने लगी । गुल ने रोक लिया, कहने लगा

—आनेवाली कल का एक-एक पल गिनूंगा नीलम

—अवश्य आऊंगी । नीलम ने पग उठाए । गुल बाढ़ों तक साथ आया वह आगे बढ़ी । मन घर पहुंच गया । बाप आया होगा, खाना नहीं बना है । माँ के मरने के बाद घर की संभाल नीलम पर थी । बाप बेटी पर जान छिड़कता था ।

भावना के पर लगे । जिसे छुप-छुप के देखा करती थी आज मिला था, आस की प्यास बुझी थी, मन के मन्दिर में स्थापित मूर्ति का साक्षात्कार हुआ था । प्रेम ने छल किया, प्रीतम से मिलने गई ।

सीने पर सर रख दिया, शरमा गई, कल का वादा करके आई है, कल मिलेगी । अब्बा—अब्बा दिन-भर का थका-हारा सो जायगा, वह चुपके से चल पड़ेगी । कौन जाने, कौन गया है ?

गुल का रोआं-रोआं नाच रहा था । जाने कब-कब वह भगवान के आगे नत मस्तक हुआ था, हाथ ऊपर उठे थे, अन्त:करण से पुकार निकली थी—हे भगवान, मेरा प्यार और प्रिया दोनों तेरे साये तले हैं, कोई आंच न आये, आज पहला मिलन है ।

नीलम घर पहुंची आग जलाई, रोटी सेंकी, सालन सुबह का बचा रखा था

सुबह हुई गुल ने गुड़-चने मुहल्ले में बांटे। सबने पूछा तो कह दिया न्याज़ दी है। नीलम एक अरसे से उसके दिल में समाई हुई थी, वह उस पर जान छिड़कता था लेकिन लाख प्रयत्न करने के बाद भी बात करने का अवसर न मिल सका था। रात की अकस्मात् मिलन ने दिल की जलन को शान्त किया। गुल का चहकना ठीक था। उसकी प्रसन्नता की सीमा का अनुमान वह करे जिसने विरह के दिन बिताए हों। उसका संसार संवर गया।

नीलम ने सुना तो मन ही मन हंस पड़ी। गुड़-चने चूम-चूम के रखे। पहाड़ी जूती निकाली, सलवार धोया, कुरता साफ़ किया। वह अभी से रात की तैयारी में लीन थी। सब काम करके बाहर निकली तो बानो मिल गई। पिछली रात बानो ने कुछ देख लिया था। पूछ लिया—

—गुल ने रात कुछ कहा ?

—चुप। वह बिगड़ गई।

—हूँ, रात नयना लड़ गए

—अरे नहीं। वह घबरा गई।

बानो ने फिर छेड़ा—गुल बड़ा छैला है

—तो तुझे क्या, होगा। बड़े भोलेपन का स्वर था। बानो झुकी, नीलम के कान में धीरे से बोली—सच बता, रात क्या हुआ

—मालटे लेने गई थी

—झूठी कहीं की

—सच कहती हूं बानो

बानो को कुछ याद आया, झट बोली—तुम्हें गुल की क़सम

—हूँ

प्रेम के मदिरा का रग न छुपा, वह हँस पड़ी। बानो को सब कुछ बता दिया। वादा भी ले लिया कि वह किसी से कुछ न कहेगी। बानो बड़ी लगन से सब सुनती रही। कहते-सुनते दोनों झरने के किनारे पहुंचीं जहां और कई ललनायें अपने काम में व्यस्त थीं। कोई कपड़े धो रही थी, तो कोई सीने-पिरोने में लगी थी, कुछ यूंही बैठी इधर-उधर की बातें हाँक रही थीं। चारों ओर लम्बे-लम्बे घने वृक्ष थे, बड़ा मनोरम स्थान था। वहाँ स्त्रियों का राज्य था, पुरुषों का साहस उधर जाने के लिये साथ न देता। सच मानो तो वह स्त्रियों की परिपाटी थी जहाँ पुरुषों का आना भी मना था।

शाम हुई, नीलम ने खाना बनाया। जब शाहजी खाकर बिस्तर पर लुढ़के तो चुपके से खीर का प्याला थाली में रखकर कपड़े से बाँध दिया। यह खीर उसने बड़े जतन से बनाई थी। दूध, चावल, गुड़ और सूखे मेवे डालकर स्वाद भर दिया था। उसने सोचा, रात को जाएगी तो गुल के लिये लेती जायेगी।

प्याला खाट के नीचे रखा, ओढ़नी सिराहने रखी, धीरे से लेट गई। कभी-कभी कनखियों से अब्बा को देख लेती जो हुक्के का दम खींच रहा था। चित्त डावाडोल था। एक-एक पल भारी हो रहा था। थोड़ी देर बाद अब्बा ने हुक्के को छोड़ जम्हाई ली तो नीलम का दिल उछलने लगा, जी चाहा अभी भाग खड़ी हो लेकिन बाबा को जानती थी, वह सोते-सोते बहुत देर लगाता है। अब्बा

का हुक्का छोड़ना निद्रा का बुलावा था।

जब अब्बा की नाक बोली तो दबे पाँव उठी। ओढ़नी सिर पर डाली, खीर का प्याला उठाया, आगे बढ़ी, द्वार खोले, फिर बाहर से बन्द करके मदमाती चाल चलने लगी। चारों ओर अँधेरा था, दूर-दूर तक सन्नाटा था। उसके चाल में तेजी आई। हृदय में भावना, मन में उल्लास, विचारों में उत्सुकता का बोझ लिये वह प्रीतम से मिलने जा रही थी। बड़ी कठिनाई से दिन बिताया था, रात आई थी।

गुल के कुज के पास पहुँची। रुक गई। दूर तक कुंज की सीमा थी। इस बात पर भी उसे गर्व था कि उसके प्रेमी के पास इतना बड़ा बाग़ था। सारे गाँव में उसका मान था। गुल से अधिक भूमि केवल उसके बाप और दो एक और आदमियों के पास थी, शेष सब उससे गरीब थे।

वह नारी थी और एक नारी के लिये ये बातें बड़ी सुखदायक हैं कि उसका चाहने वाला किसी से कम नहीं। वह अपनी हमजोलियों में सीना तान कर चल सकती है। वह खड़ी खुश होती रही। कुछ आहट पाकर चौंकी, इधर-उधर देखा कुछ नहीं था, केवल उसकी कल्पना थी। कुछ दूर गई, गुल ने पुकारा

—नीलम आ गई तुम, बड़ी देर से रास्ता देख रहा था

—वह भागकर सीने से जा लगी। पूछा

—कब से यहाँ खड़े हो ?

—जब से सूरज डूबा है

—गुल ! वह उससे लिपट गई। गुल ने कपड़ा बगल में देखते ही पूछा

—यह क्या है ?

वह मुस्कराई—तुम्हारे लिये खीर लाई हूँ, अपने हाथों से बनाई है

—चलो, अन्दर चलकर बैठें। गुल ने नीलम की बांह पकड़ते हुए कहा।

—कोई देख न ले। वह अठिलाई।

दोनों साथ-साथ चले। गुल की बाहों ने कटि प्रदेश पर घेरा डाला। खीर का प्याला हाथ में ले लिया। वे एक चबूतरे पर जाकर बैठ गये। एकाएक गुल के मन में तरंग उठी। वह कुछ नीचे बैठ गया। नीलम चकित हो पूछ पड़ी—यह क्या गुल, ऊपर बैठो

—नहीं नीलम! वह प्यार से बोला—मैं यहीं ठीक हूँ। और अपना सर उसके नर्म जांघों पर रख दिया। नीलम कुछ क्षण यूंही बैठी रही। उसे ऐसी आशा नहीं थी कि गुल उसे इतना चाहता है, इतनी इज्जत करता है। वह खुशी में डूब गई लेकिन तुरन्त चेतना जागी। जल्दी से सरक कर उसके साथ बैठ गई। कहने लगी—

—गुल मैं नारी हूं, तुम्हारे चरणों में मेरा स्थान है

—मेरी नीलम! गुल ने तुरन्त सीने से लगा लिया।

—तुम नहीं जानतीं नीलम, तुम्हारा गुल तुम्हें कितना प्यार करता है

—जानती हूँ

—बताओ कितना

मुस्काकर बोली—इतना, जितनी बड़ी ज़मीन है यह

दोनों हँस दिये, नीलम ने उसके सीने पर सिर रख दिया, गुल ने उसे अपने अंकवार में भर लिया। वह प्यार भरी बातों में मग्न हुये।

—गुल, मुझे धोखा तो नहीं दोगे

—नीलम! वह चिल्ला पड़ा—यह तूने क्या सोचा

—मुझे बचन दो, गुल! वह उसके हाथों को दबाते हुए बोली।

गुल ने आसमान की ओर देखा।

—इन जगमग-जगमग करते हुए तारों को गवाह बनाकर, अल्ला क़सम नीलम, तुम्हें यह वचन देता हूँ कि तुमसे कभी छल नहीं करूँगा। गुल अपनी

जान दे देगा लेकिन ग्रान रखेगा नीलम !

—नहीं गुल मुझे तुम्हारे चाह की चाहत है, इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये।

—मेरी जान ! ।वह भावुकता से भर गया

—यह एक मर्द का कौल है जो चट्टानों से अधिक ठोस और इन पहा की चोटियों से कहीं ऊँचा है, तुम गुल की जिन्दगी हो।

जिन्दगी ! वह धीरे से बोली—मैंने तुम्हें अपना सरताज मान लिया है।

—हूँ ! गुल ने उसे भींच लिया, ज़ोर से सीने से चिपटा लिया। वह बिलबिला उठी और फिर दोनों हँसने लगे।

—लो खीर खाग्रो

—यह दुख तुमने क्यों उठाया

—तुम्हारे लिये तो जीवन भर दुख उठाने को तैयार हूँ

—खुदा ऐसा न करे

गुल ने कहा ही था कि नीलम ने खीर उसके मुँह में डाल दी। वह गुल को खिलाती रही, गुल उसे खिलाता रहा। रात के गहरे अँधेरे में घने पेड़ तले सारी दुनिया को भूलकर वे अपनी दुनिया बसाए हुए थे।

सारा गाँव सो रहा था मीठी नींद में। वे जाग रहे थे। पास-पास बैठे, पूर्णतः चैतन्य, एक दूसरे से जीवन-भर अलग न होने का वायदा कर रहे थे। दोनों ने एक साथ दुग्रा मांगी—खुदा उन्हें हर मुसीबत से बचाए, उनकी मुहब्बत पर कोई आँच न आए।

समय अपनी गति से भाग रहा था, नीलम उसकी गोद में सिर रखे लेट गई, गुल बातें करता रहा वह सुनती रही। अभिलाषा जागी कि वह सदा इसी तरह लेटी रहे, गुल मीठी-मीटी बातें सुनाए। किसी का उन्हें डर न हो, कोई पूछने वाला न हो, बस्ती से दूर किसी अकेली जगह में वे इसी तरह...

लगन में लीन व्यक्ति ऐसा सोचा तो करते हैं लेकिन ऐसा हुआ नहीं करता। समय कभी किसी की प्रतिक्षा नहीं करता, न किसी के लिये पल-भर ठहरता ही है। सुबह का तारा निकला आया। नीलम घबरा के उठ बैठी।

—सुबह होने को आई है गुल

—हां नीलम, अब रात कुछ ही बाक़ी है। उसने आकाश की ओर इधर-उधर देखते हुए कहा।

—मैं जाती हूँ गुल

—कुछ देर और ठहर जाओ। गुल ने विनय की। उसे अब्बा का ख्याल था, बोली—नहीं, अब जाने दो गुल, कल फिर मिलूँगी

—अभी तो जी भरके बातें भी नहीं हुईं। गुल गिड़गिड़ाया। गुल ने दोनों हाथों से दोनों गालों का स्पर्श किया।

—अब्बा जाग जायेंगे

गुल के शरीरमें सिहरन पैदा हुई—मुझे यूँही तड़पता छोड़ जाओगी

—जी तो नहीं चाहता गुल। वह उठते हुए बोली—पर अब्बा का डर है

गुल भी उठ खड़ा हुआ, नीलम की बांह पकड़ी। साथ बाढ़ तक आया फिर अलग होने से पहले दोनों गले मिले। लिपटी हुई बाहें अलग हुईं।

नीलम बिजली की सी तेजी से घर की ओर भागी। अज़ान होने ही वाली थी और शाह जी अज़ान के साथ ही उठ बैठते थे। धीरे से द्वार खोला। बाबा अभी तक सो रहा था। प्याला चरपाई के नीचे रखा। बड़े प्यार से बिस्तर का आलिंगन किया। अभी चादर ओढ़ा ही था कि दूर से अल्लाहुओअकबर की गूंज सुनाई दी।

दिन नीके बीते जाते थे। दोनों के जीवन ने प्रेम की ज्योति जला रखी थी, उसके सुहावने व लुभावने उजाले में आस-पास, दूर-दूर तक दिखाई अंधेरा न देता था।

प्रेम के यह राही, दो दिलों की धड़कनों में समाई हुई इच्छाओं को समेटे हुए आगे बढ़ते ही जा रहे थे, कोई रुकावट न थी। कोई अड़चन न थी। मंजिल समीप थी, "बहुत समीप थी। उन्होंने देखी नहीं थी अनुमान अवश्य लगाया था।

नीलम इसी तरह रात में मिलने जाती, गुल अपनी आंखें बिछाता और जब दोनों मिल जाते तो फिर समय सांप की तरह निकल जाता। नीलम सवेरा होने से पहले ही गुल से अलग होती, घर आ जाती।

दोनों के जीवन में परिवर्तन आ चुका था। गुल और अधिक मेहनत से काम करने लगा था। बाग़ में उतरे फलों को बड़े लगन और जतन से शहर की मंडी में भेजता ताकि अच्छी कमाई हो। नीलम के लिये एक पूंजी जोड़े।

पहाड़ी रीति के अनुसार जिसके पास जितनी जमीन होती उसे उतना ही बड़ा अधिक समझा जाता है। गुल चाहता था कि उसके पास दो खेत ज़ाफ़रान के और हो जायें तब वह खूब धूम धाम से शादी करें। नीलम भी गुल के मन की बात जानती थी। वह अपने प्रीतम की प्रीत के लिये, अपनी हार्दिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये निमाज़ के बाद घन्टो माथा टेके दुआएं मांगती रहती।

नीलम जब कभी बड़ी खुश होती तो बानो उसे छेड़ती। केवल बानो को ही

उसके प्रेम की रागिनी का पता था। अकेले में दोनों सहेलियां मिलतीं तो बानो पूछती

—कहो रात कैसे कटती है

नीलम हंस देती, लजा जाती।

—मेरी जान रातों को जागा न करो।

—क्यों ? वह आंखों में आंखें डाले पूछती।

—अगर तुम्हें कहीं कुछ हो गया। बानो मटक कर कहती

—तो यह रंग रूप ढल जायेगा

नीलम और लजाती। बानो चोटी खींच कर कहती

—अरे ओ पागल ! कहीं वह तुम्हें छोड़ दे ?

—बानो ! वह कांप जाती, रोआं रोआं सिहर उठता।

—ऐसी बातें न करो, गुल ऐसा नहीं है

बानो नाक-भौं सिकोड़ती—अरी मर्दों का कोई भरोसा नहीं, दूध और मर्द के बिगड़ने में कोई देर नहीं लगती

नीलम दुखी हो गई। बानो से तो कुछ कहा नहीं लेकिन हृदय में भय समा गया। बात कुछ दिल में लग गई। दूध और मर्द के बिगड़ने में देर नहीं लगती लेकिन दूध तो हर रोज वह दही जमाने के लिये रखती थी और कई बार बिगड़ जाता था, अपने आप ही।

दिल धक-धक करने लगा, सूरत पर निराशा झलकी। बानो को वहीं छोड़ घर आई। उसकी बात बार-बार याद आ रही थी और उस पर विश्वास

करने का दिल भी चाहता था। खाट पर बैठ कर बहुत देर तक सोचती रही।

फिर विचारों की लहर उठी। पांचों अंगुलियां भी तो समान नहीं होती और गुल—वह तो बड़ा ही अच्छा है, कितना प्यार करता है। ऐसा व्यवहार उससे सम्भव नहीं। यह बात झूठ है। वह अपने आप को कोसती कि बानो से उसने ऐसी बात क्यों की।

उसके कोमल हृदय में तरह तरह की कामनाओं ने जन्म लेना आरम्भ किया। प्रेम का उसे कोई अनुभव नहीं था। और न ही वह जानती थी प्रेम किसे कहते हैं। प्रेम के मैदान में एक अनाड़ी खिलाड़ी थी। वह तो बस इतना जानती थी कि गुल उसे अच्छा लगता है, दिल उससे बातें करना चाहता है और आंखे उसे देखना चाहती हैं। गुल ने उसे बताया था, यही प्रेम है और वह इसी पर निश्चिन्त हो गई।

बानो ने जब यह बातें कहीं तो जी में आया कि उसका मुँह नोच ले लेकिन चिर-परिचित होने से वह रुक गई। ऐसी वैसी बात होती तो बानो को वह वहीं पीट डालती। लेकिन अब तो स्वयं डर गई थी कि गुल उसे छोड़ न दें।

अगर ऐसा हुआ तो वह जान दे देगी। उसी के बाग में फन्दा बनाकर अपने गले में डाल लेगी। वह गुल को छोड़कर और किसी से शादी नहीं करेगी।

दोपहर से शाम हुई। वह खाना बनाने में जुटी लेकिन निश्चय कर लिया था कि आज रात यह बात गुल से अवश्य पूछेगी।

रात हो गई। नीलम अब्बा के सोने की प्रतीक्षा में थी। जैसे ही अब्बा की आंख लगी। वह चुपके से दबे पांव उठ चली। बाहर ताकझांक कर लिया। कुंज की ओर पांव उठे।

चान्दनी छिटकी हुई थी। उस की ठंडी किरणों में दिल को ठंडक महसूस हुई। रात बड़ी मन लुभावनी थी। खेतों में जाफ़रान के छोटे-छोटे, नर्म-नर्म पौधे हल्की-हल्की हवा से कांप रहे थे मानो किसी से डर रहे हों।

सुनसान पगडन्डी जिस पर दिन में बैलों की दौड़ धूपऔर उनके हांकने वालों कीहा हू होती रहती थी, इस समय शांत थी, शान्ति का राज्य था बाहर।

नीलम प्रसन्न थी। ऐसा वातावरण और प्रेमी से मिलन की इच्छा—चाल तेज़ हो गई। वह ऐसे में तुरन्त गुल के पास पहुंच जाना चाहती थी। प्रेमियों को ऐसी सुहावनी व लुभावनी चांदनी कभी-कभी ही मिला करती है।

वह अभी कुछ दूर ही थी कि गुल ने उसे देख लिया। वह दूर से ही दिखाई दे गई थी—धीरे से पुकारा।

—नीलम। मेरी जान

वह भागी और आते ही गुल ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया। मीठे वचन निकले—

—बहुत देर लगाकर आती हो

अब्बा नहीं सोते हैं ना। वह बड़े भोलेपन उसे बोली। गुल उसके साथ चलता हुआ कहने लगा—अल्लाह ने चाहा तो जल्दी ही तुम अब्बा के घर से मेरे घर आ जाओगी।

—सच गुल। वह खुश हो गई।

गुल हंसकर बोला—हां हां

दोनों उसी मिट्टी के चबूतरे पर बैठ गये। गुल ने कुछ फल तोड़ थे। उसके सामने रखते हुये बोला—लो खाओ

—मैं नहीं खाऊंगी। वह सिर झटक कर कह उठी।

गुल हैरान हो गया—क्यों ?

—पहले एक बात बताओ

गुल ने धीरे से कहा—पूछो

नीलम ने गम्भीरता से कहा—सच्ची सच्ची बताना

—हाँ, हाँ। गुल ने मुंह बनाया—पूछो तो सही

—मुझे छोड़ तो नहीं दोगे। उसने तुरन्त कहा।

—तुम्हें मुझ पर शक है नीलम। बड़ा प्यार भरा स्वर निकला।

—नहीं

—फिर पूछती क्यों हो ?

—ऐसे ही। नीलम का सिर झुक गया।

—गुल बड़े ठोस शब्दों में कहने लगा—मैं तुम्हें वचन दे चुका हूं और बचन तोड़ना मर्दों का काम नहीं

—गुल ! वह सीने से जा लगी।

—कुछ भी हो, मुझे तो नहीं छोड़ोगे

—कभी नहीं। गुल ने उसका हाथ चूमा

—चाहे मैं बदसूरत हो जाऊं ? धीरे से वह बोली।

गुल ने आंखें मिलाते हुये कहा—गुल को तुम्हारी सूरत से नहीं तुम से इश्क है, वह लिपट गई। मन को शान्ति मिली।

बानो की सारी बात सुना दी। वह खिलखिला कर हंस पड़ा। बड़ी देर तक हंसता रहा। नीलम की भोली भाली भावनाओं पर चकित होता रहा।

ज़रा-सी बात ने क्या रंग दिखाया था।

गुल ने उसे विश्वास दिलाया।

वह उससे प्रेम करता है, करता रहेगा। कभी नहीं छोड़ेगा चाहे उसे अपनी जान पर खेलना पड़े। नीलम भोली तो थी ही। प्रेमी के दो मीठे बोल—

सुन कर खुशी से फूली न समाई।

ठंडी-ठंडी चाँदनी में दोनों, मीठे-मीठे प्यार भरे गीत धीरे-धीरे गाते रहे। प्रेम का फूल फलता-फूलता रहा। नीलम को यह बातें बड़ी अच्छी लगीं। उसे दिल ही दिल में बानो पर गुस्सा आता रहा जिसने उसको अपने अच्छे गुल पर शक करने को कहा था। गुल उसका है, वह गुल की है, तो लोगों को जलन क्यों होती है।

चाँद धीरे-धीरे ढलने लगा। नीलम ने आकाश की ओर देखा। सितारे कुछ कह रहे थे। उठते हुये बोली—सुबह होने वाली है गुल

—हूँ! वह उदास होकर बोला—रात कितनी जल्दी बीत जाती है

नीलम ने सिर फिर सीने पर रख दिया। लजाकर होले से बोली—गुल, तुम अब्बा तक बात तो पहुँचाओ।

—यह फ़सल कट जाये तब बात करूँगा वह सोचता हुआ बोला। उसका विचार था, फ़सल कटने में एक महीना बाकी है। एक मास बाद बात होगी। बहुत से बहुत एक मास और शादी में लगेगा। दो चाँद के बाद गुल उसकी बीवी बन जाएगी।

यह सारी बातें नीलम के दिल ने भी सोचीं। गाँव की सब लड़कियाँ उससे जलेंगी। वह उनको और जलाने के लिये दिन-भर बाग़ में रहा करेगी। खेतों पर आते जाते लड़कियाँ देखेंगी, खूब जलेंगी।

चांद सिर से हटकर दूर चला गया। नीलम भी उठ चली। समाज के डर ने दो प्रेमियों को अलग कर दिया।

दोनों जब मिलते, बड़े खुश होते। अलग होते तो उदास हो जाते। रात भर साथ रहने पर भी उनकी बातें समाप्त न होतीं। सुबह बिछुड़ते तो ऐसा लगता मानो वह अभी-अभी तो मिले हैं। नीलम चली जाती। गुल बाढ़ के सहारे खड़ा हो जाता। जब तक वह आँखों से ओझल न हो जाती वह वहीं खड़ा रहता और जब निगाहों से छुप जाती तो ठंडी आह भरकर फिर उसी चबूतरे पर लेट जाता।

उसे विश्वास था वह नीलम से ही शादी करेगा। धीरे-धीरे अब उसके पास पैसे जमा होने लगे थे। सवा दो हज़ार रुपया तो नकद जमा हो गया था। उसका प्रयत्न था कि अगर अधिक से अधिक रक़म जमा हो जाये तो गाँव वाले दंग रह जायेंगे। नीलम का बाप शाह भी खुश हो जायेगा।

फ़सल कटी तो गाँव में मेले की तैयारियाँ होने लगीं। हर साल फ़सल के बाद गाँव वाले बड़ी धूम-धाम से मेला मनाया करते थे। आस पास की बस्तियों के लोग भी आ जाया करते थे। दंगल में कबड्डी, नेजाबाज़ी, निशाना बाज़ी और घुड़सवारी—हर खेल की प्रतियोग्यता होती। सफल नवयुवक इनाम पाते।

हमेशा की तरह इस बार भी खेती के काम से छुट्टी पाकर गाँव वालों ने नीलम के बाप को मेले का भार सौंपा। नम्बरदार बूढ़ा हो चुका था। पिछले चार साल से शाहजी मेले का कार्य भार संभाले हुये थे।

गुल भी तैयारी कर रहा था। पिछले साल गोला फेंकने में और नेजाबाज़ी की प्रतियोगिता में प्रथम आया था। निशानेबाज़ी में नम्बरदार का लड़का अज्जू बाज़ी ले गया था। मेले में कुछ दिन बाकी थे। गुल ने बड़ी मेहनत से तैयारी शुरू की।

बाग़ के एक कोने में रेत की बोरियाँ रखकर उसके सामने लकड़ी का पटरा खड़ा करके घण्टों निशानेबाजी करता। नीलम उसके पास आ जाती वह दोनों मिलकर अपने अल्लाह से दुआ माँगते कि इस बार गुल सबसे आगे निकल जाये।

गुल यह भी जाता था कि पहाड़ी रीति के अनुसार जिसका निशाना सबसे अच्छा होता है उसे बड़ा दिलेर समझा जाता है। वह जिस लड़की से भी शादी करने की इच्छा प्रकट करता है। उस लड़की का बाप मान जाता है।

उसे आशा थी कि अगर इस बार उसका निशाना सफल रहा तो भरे

मंडप में नीलम पर हाथ रख देगा, कोई भी इंकार नहीं करेगा। भरे मेले में शाह का भी साहस नहीं होगा। फिर उसे भी तो किसी न किसी से नीलम की शादी करनी ही है। अगर गुल सफल रहा तो वह इंकार क्यों करेगा ?

अब कुछ दिन ही बाक़ी थे। गुल अपने बाग़ की बाढ़ के बाहर खड़ा नीलम की राह देख रहा था। दोपहर होने को आई, नीलम ने आने का वायदा दोपहर से पहले ही किया था। वह बड़ी बेचैनी की हालत में इधर-उधर टहल रहा था कि वह दूर से आती दिखाई दी।

मुरझाए चेहरे पर बहार आगई। वह एकटक उसी ओर देखने लगा। नीलम की आंख मिली तो वह दौड़कर गुल के कलेजे से लिपट गई।

अपने समीप ही घोड़े के टापों की आवाज़ सुनकर दोनों का ध्यान पलटा। कुछ ही पग दूर नम्बरदार का बेटा घोड़े पर सवार लगाम खींच रहा था। नीलम एकदम डर गई। उसने दोनों को एक साथ देख लिया था। घबराकर गुल की ओर देखा जो उसे छोड़कर, ज़रा संभलकर खड़ा हो गया था।

अज्जू से पूछा—क्या बात है अज्जू ?

अज्जू आंखें चढ़ाये घूरता हुआ बोला—नीलम यहां क्या कर रही हो ?

गुल ने और कड़े स्वर में कहा—तुम कौन होते हो पूछने वाले ?

—तुम गाँव की लड़कियों की इज्जत से खेलते हो

गुल गरज पड़ा—जबान बन्द रखो अज्जू, तुम कोई गाँव के नम्बरदार नहीं

अज्जू हँस पड़ा—मैं भी किसी नम्बरदार से कम नहीं

—तुम इस भुलावे में न रहना अज्जू

गुल एक कदम आगे बढ़ा, नीलम ने उसे रोक लिया।

अज्जू अचकचाकर कहने लगा—इतनी हिम्मत !

पिछले साल की हालत याद नहीं।

—हारना-जीतना भाग्य की बात है अज्जू। गुल बिफर गया। अज्जू

खिलखिला पड़ा। ताना मारते हुए कहने लगा—अब की बार मेले में नीलम के भाग्य का फैसला हो जायेगा।

यह कहकर वह सरपट घोड़ा दौड़ता हुआ आगे निकल गया। नीलम ने सिसकना शुरू कर दिया।

गुल उसे बाग़ में ले आया।

तुम रोती क्यों हो ?

—गुल ! वह हिचकी लेकर बोली—अज्जू बड़ा ज़ालिम है। अगर उसने निशाना जीत लिया तो तुम बाज़ी के साथ-साथ मुझे भी हार जाओगे।

—नीलम ! वह भावुकता भरे स्वर में बोला—अल्लाह की रहमत रहे तो निराश होना बन्दे का काम नहीं

—नहीं गुल। वह सीने से लगकर कहने लगी—उसे अपने निशाने पर नाज़ है।

—मुझे अल्लाह की रहमत पर नाज़ है

गुल ने आकाश की ओर देखा, हाथ उठाये, गिड़गिड़ाकर दुआ माँगी—ऐ मेरे मौला तू मेरा और देखा, मेरी मुहब्बत का रखवाला है। मेरी इज्जत तेरे हाथ है। मेरी प्रीति की लाज रखना। दुआ माँगते-माँगते उसकी आँखें डबडबा गई मुँह पर हाथ फेरकर देखा कि नीलम भी रो रोकर दुआयें माँग रही है।

गुल ने राइफल उठा ली। निशाना लगाया। ठीक जगह पड़ा। दोनों के चहरे से प्रसन्नता झलक पड़ी और फिर तड़ाक-तड़ाक गोलियाँ राइफल के नाल से निकलती रहीं। पटरे को चीरते हुये रेत की बोरियों में धंसती रहीं। गुल का हौसला बढ़ता रहा। शाम होने से कुछ पहले ही नीलम घर की ओर मुड़ी। सामने अज्जू खड़ा था।

—मेरा रास्ता छोड़ दो अज्जू। वह बेधड़क बोली।

अज्जू हँस पड़ा—इस मेले में बाबा से कहूंगा कि शाह से इस परी को

माँग ले। यह कहकर अज्जू आगे बढ़ा। ओढ़नी पर हाथ रखना चाहा। नीलम पीछे हटी—रास्ता छोड़ बदमाश।

—अपने होने वाले शौहर को बदमाश कहती हो। अज्जू और आगे बढ़ा।

—लज्जा नहीं आती, ठहर, ओ कमीने। नीलम ने भारी पत्थर उठाया आंखों में खून उतर गया। बोली

—रास्ता छोड़ दो, नहीं तो सिर कुचल दूंगी।

अज्जू ने देखा तो सर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुआ। नीलम ने पत्थर फेंक दिया। हुबस हुबस कर रोने लगी। इतने में उसका बाप शाह उधर निकल आया। बेटी को रोते देख शेर की तरह बेकाबू होकर पूछा—

क्या हुआ, बेटी !

नीलम ने सारी बात बता दी। शाह की आँखों से चिनगारियां निकलने लगीं, वह नम्बरदार के घर जाने लगा तो नीलम ने पकड़ लिया।

—अब्बा अभी नहीं, और फिर वह भाग गया है मेरे सामने से।

अच्छा ! शाह ने दांत पीसकर कहा—बुज़दिल कहीं का !

बाप बेटी घर की ओर चले। नीलम ने मेले के बारे में पूछा। शाह ने बताया कि सब इन्तज़ाम ठीक हो गये हैं। मराशियों को ढोल बाजे के लिये कह दिया है, दो दिन बाद पहुंच जायेंगे। इलाक़े में मुनादी हो रही है।

दोनों घर पहुँचे। शाह हुक्का गर्म करके खाट पर बैठ गया। नीलम ने थाल में आटा निकाला। बाप के पास बैठ कर गुंधने लगी। दो चार इधर-उधर की बातें करके डरते-डरते पूछा।

—अब्बा अबके निशाने में कौन जीतेगा

—हूँ। शाह चौंक पड़ा—वही बुज़दिल

नीलम कांप गई—कौन अब्बा ?

शाह घृणा से बोला—वही नम्बरदार का लड़का अज्जू। कमबख्त है बुज़-दिल लेकिन निशाना बड़े ग़ज़ब का है

नहीं अब्बा, वह नहीं। नीलम ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

शाह को आश्चर्य हुआ—वह नहीं जीतेगा तो कौन जीतेगा।

वह बेड़धक बोली—गुल।

—तू पागल है

—नहीं अब्बा नहीं, मैं सच कहती हूं

नीलम के चेहरे पर लाली दौड़ गई। शाह ने मुंह में हुक्के की नाली दबा मुस्कराकर कहा।

—मुझे कैसे मालुम

—मैं......मैं। एक क्षण अटक गई।

मैं गुल का निशाना देखकर आई हूं

—अच्छा! शाह ने हुक्का छोड़ दिया—क्या बहुत अच्छा निशानेबाज़ हो गया है वह

हां अब्बा हां! वह खुशी से चिल्लाई।

—हो सकता है बेटी। वह कुछ सोचकर फिर बड़बड़ाया।

—जवाब तो उस नवजवान का भी नहीं

हूं...। नीलम के मुंह से निकल गया। वह अपने बाप से, अपने प्रीतम की प्रशंसा सुनकर मुस्काये बिना न रह सकी।

उसके दिल के एक कोने में प्रसन्नता की लहर उठी। यह बात मन में बैठ गई कि अब तो वह गुल की दूल्हिन बनेगी

और अगर वह निशाना हार गया तो!

बैठ बैठ उसे विचार आया। नहीं...वह दिन रात अल्लाह मियां से दुआ मांगती है। गुल जरूर जीतेगा। यह दुआ थी जिस पर उसे आशा थी।

विश्वास था कि यह मानी जायेगी ।

गुल ने अपने पुराने मित्र नूर को मेले में आने के लिए निमन्त्रित किया था । उत्तर भी आ चुका था कि वह मेले से एक दिन पहले पहुंच जायेगा । मेलें में अभी दो दिन बाकी थे ।

गुल रात-दिन निशाने में जुटा हुआ था । सारा दिन उसके राइफ़ल से गोलियाँ निकल-निकल कर लकड़ी के पटरे को चीरती हुई रेत में धंस जाती । रात को भी यही हालत रहती । लोग भी हैरान थे कि गुल के मन में क्या बात समा गई है ।

नीलम उसे हिम्मत बंधाती रहती कि अबकी वह ज़रूर जीतेगा । उसे भी आशा हो चली थी कि अब वह निशाना जीत लेगा । उसकी प्रिया का अशीश उसके साथ था जो उसके हौसले के बढ़ावा दे रहा था ।

मेले से एक दिन पहले नूर भी उसके गाँव आ गया । गुल दिन-रात निशाने में लीन था । नूर को आश्चर्य हुआ । गुल से पूछा तो उसने सारी कहानी सुनाई नूर स्वत: बड़ा अच्छा निशानेबाज़ था । उसे जो क़ानून क़ायदे मालूम थे, उसने पूरे दिन में उसे बता दिये ।

नूर गुल का बड़ा पुराना मित्र था । उसने नूर की बड़ी आवभगत की । नीलम ने भी नूर को अपने हाथ की पकी खीर खिलाई जिसे बनाने में वह बड़ी निपुण थी ।

एक दिन पहले से गाँव में मेले की रल-पेल और चहल-पहल दिखाई देने लगी । मेला प्रात: आरम्भ होना था मगर पंडाल अभी से भर गया था । दूकानें, खेल तमाशे, ढोरों के गोल सभी कुछ आ गये थे ।

सुबह सूरज की पहली किरन फूटी। पंडाल में लोग एकत्रित होने लगे, ढोल बजे, बंशी के मीठे स्वर ने पूरे गाँव में जादू जगाया। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, सब पंडाल की ओर आने लगे।

शाह सुबह की निमाज पढ़ने के बाद ही पंडाल की ओर जा चुका था। नीलम तैयारी में लीन थी, अपने सारे कपड़ों में सबसे अच्छा जोड़ा निकाल कर पहना। नेत्रों में काजल की लकीर डाली। बाल संवारे और एक अंगड़ाई लेकर घर से निकल पड़ी। सीधी गुल के पास पहुंची। वह बाग़ में प्रतीक्षा कर रहा था। नीलम को देखकर नूर खिसक गया ताकि दोनों खुलकर बातें कर सकें।

नीलम ने आते ही नयनों के तीर चलाये, मुसकाई। मटक कर बोली,

—अच्छे तो हो।

आओ नीलम, मैं तुम्हारी ही इन्तजार में था। गुल ने हाथ बढ़ाये, वह उसके बाहों में चली गई, उसने कलेजे से चिपटा लिया, हाथों को चूमते हुये बोला—आज तुम्हारी दुआयें अपना रंग दिखायेंगी

—इन्शा अल्ला! नीलम ने विनय भरे स्वर में कहा।

दोनों चबूतरे पर बैठ गये। दूर से ढोल की आवाज़ आ रही थी, जिससे पता चल रहा था कि लोग पंडाल में इकट्ठे हो रहे हैं।

दोनों बातों में लीन थे, प्यार भरी बातें। नूर उनसे दूर बाग में टहल रहा था। गुल जानता था वह क्यों चला गया, उसने नीलम को बताया। वह लज-कर हंसने लगी।

कुछ देर बाद गुल पंडाल में जाने के लिए उठा। राइफ़ल कंधे पर डाली। नूर को बुलाया, वह समीप आगया, नीलम ने सलाम किया, नूर ने प्यार से जवाब दिया। तीनों बाग से साथ-साथ चले।

पंडाल की ओर जाते हुये नीलम के दिल की धड़कन तेज तो चली। ज्यों-ज्यों पंडाल समीप होता गया, नीलम के दिल में खलबली बढ़ती गई। लेकिन उसे आशा थी कि गुल अवश्य विजयी होगा। उसने बड़ी मिन्नतें मानी थीं और घी के चिराग जलाने के लिये उसने सवा रुपया भी इकट्ठा किया था।

पंडाल थोड़ी दूर रह गया तो नीलम उसे अशीश देकर दूसरी राह एक औरतों की ओर चली गई। गुल और नुर ने पंडाल में कदम रखा तो एक कोलाहल सा मच गया। सब जानते थे पिछले वर्ष अज्जू ने गुल को निशानेबाजी में मात दी थी और अब की बार गुल बड़ी तैयारियां करके मैदान में आया है। उसके साथियों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

कुछ देर बाद शाह ने हाथ ऊपर उठाकर गोला फेंकने वाले नवजवानों को दावत दी। आठ नवयुवक मैदान में उतरे, इन में गुल भी था। पहले ने गोला उठाया, सारे पंडाल में शान्ति छा गई और जब कुछ पीछे हटकर गोला फेंका तो कोलाहल का पारावार न था।

एक के बाद दूसरे गोला फेंकते रहे। सातवाँ नम्बर अज्जू का था। उसने गोला हाथ में लेकर पहले गुल फिर दूर खड़ी नीलम को देखा। गर्व से सीना फूल गया। दूर से भागता हुआ आया, गोला फेंका और सच वह पहले से दूर जा गिरा था।

गुल ने गोला उठाकर आकाश की ओर देखा। नीलम के हाथ भी दुआ के लिये उठ गये, पास खड़ी बानो को कुहनी मारी। उसने भी दुआ के लिये हाथ फैला दिये। गुल के साथी चिल्ला रहे थे। अज्जू कुल्हे पर हाथ रखे गर्वीले पोज में खड़ा था।

गुल पीछे हटा, या अली का नारा लगाकर पूरी ताक़त से गोला फेंका। जब शाह नापने के लिये अज्जू के निशान से भी आगे बढा तो एकत्रित भीड़ का कोलाहल अपनी सीमा पार कर गया। चीखें, नारे, ठठोलियां ! गुल के मित्रों ने मारे खुशी के पंडाल के बीच नाचना शुरू कर दिया था।

कुछ लोगों ने उसे कंधे पर उठा लिया। अज्जू ने देखा तो दांत पीसती रह गया, मुट्ठियां कसता हुआ एक ओर चला गया। शाह ने गुल को विजया घोषित कर दिया। बस फिर क्या था, वातावरण में खलबली मच गई, एक शोर उठा, गुल का गला हारों से लद गया।

लोग नेज़ाबाज़ी की ओर बढ़ रहे थे—

गुल अपने साथियों के कंधें पर सवार था। नीलम प्रसन्नता से पागल हो रही थी। भीड़ को चीरती हुई गुल के पास आई, आते ही ऊंचे स्वर में बोली—गुल, मुबारक हो गुल।

वह मुस्काया, गले से हार उतारा, नीलम की ओर फेंक दिया। उसने हारों को लेकर सीने से लगाया। बानो के पास आकर बोली—

—अब तो मिठाई खिलाओगी ना ?

—क्यों ?

—मेरी दुआ से गुल जीता है

—अरी चल। वह अकड़ कर बोली—मैं पन्द्रह दिन से दुआ मांग रही हूँ

—अच्छा। बानो तुनुक गई—अभी तो सबसे बड़ी बाज़ी बाक़ी है

—हां, हां बानो ! बानो से लिपट कर नीलम कहने लगी—और दुआ मांगो, निशानेबाज़ी में गुल जीत गया तो शहर से मिठाई मंगवाकर खिलाऊँगी

हाथों में हाथ डाले दोनों नेज़ाबाज़ी की ओर गये जहां बहुत लोग इकट्ठे हो चुके थे।

तीसरे पहर निशानेबाज़ी की प्रतियोगिता आरम्भ हुई। इसके लिये लोग दूर-दूर से आये थे। पहाड़ी इलाके में इस मुक़ाबले का बड़ा प्रभाव था। राईफ़ल और निशाना ही इस इलाके की ज़िन्दगी समझी जाती थी।

दूर रखे पटरे पर शाह का संकेत पाते ही नवयुवक गोलियां चला रहे थे। कई युवक निशाना लगा चुके लेकिन किसी एक की गोली भी स्याह धब्बे पर नहीं लगी थी। कुछ न कुछ दूरी रह ही जाती।

दो बच रहे—एक अज्जू और दूसरा गुल। अज्जू पर सबका विश्वास था। इसलिए शाह ने उसका नम्बर सबसे अन्त में रखा। राइफल कंधे पर रखे गुल आया तो सब अचानक चुप हो गये जैसे कोई हो ही नही।

नीलम ओढ़नी सिर पर रखे, हाथ ऊपर उठाए, और उसके साथ बान भी दुआ मांग रही थी। नीलम का दिल धक-धक कर रहा था जैसे आज फट ही जायेगा। बानो भी घबराई हुई थी।

गुल के साथी सब चुप साधे बैठे थे। शाह टारगेट का निरीक्षण करके लौट आया, इशारा दिया। तड़ाक ! गोली निकली, स्याह धब्बे समेत आगे निकल गई। लोग पंडाल में कूद गये। शह ने सबको बाहर धकेल दिया। अभी एक और बाक़ी था जिसका निशान भी किसी से कम नहीं था।

अज्जू मैदान में आया। नीलम के हृदय से पुकार उठी—अल्लाह करे इसका निशाना न लगे और गुल जीत जाये।

शाह ने फिर निशाने की जगह देखी। पटरा ठीक किया और लौटकर

संकेत किया। अज्जू ने गर्व से सीना फुलाये घोड़ा दबा दिया, तड़ाक से गोली निकली, भीड़ में सन्नाटा था। स्याह धब्बे से दो सूत हटकर गोली लगी थी।

गुल की विजय का डंका बजा। भीड़ गुल पर टूट पड़ी, फूलों की वर्षा, हंगामा, नारे, एक पर एक गिर रहा था। गुल को सहयोगियों ने कंधे पर उठा लिया। नूर ने हथेली खोली जिसमें रेजगारी भरी हुई थी, उसने हाथ फैला कर जो सूट की तो ऐसा लगा जैसे गुल कोई देश विजय करके आ रहा हो। बच्चे बूढ़े नूर की सूट लूट रहे थे।

नीलम ने बानो को सीने से लगा लिया। उछलती-कूदती भागी। बानो उसके साथ थी। वह गुल से बातें करना चाह रही थी लेकिन वह भीड़ से घिरा था। बड़े प्रयत्न पर भी वह गुल के पास न जा सकी।

शाम हो चली थी। दूर-दूर से आये लोग वापस जाने लगे थे। कुछ देर बाद पंडाल में जहां तिल धरने की जगह नहीं थी अब खाली हो चुका था। दिन भर के थके हारे लोग घरों में जाकर लेट गये।

नीलम अपने घर में बैठी बेचैन थी। अभी तक गुल से भेंट नहीं हुई थी, एक नजर देखने के लिए बड़ी बेताब थी। शाह घर आया तो नीलम से कहने लगा

—कमाल हो गया भई, तुम्हारी बात सच निकली।

—क्या बात अब्बा ?

—गुल ने सालों की रीति तोड़ दी, मुझे सबसे बड़ी खुशी यह है कि उसने

अज्जू को मात दे दी, अज्जू कई साल लगातार जीतने के नशे में ज़मीन पर पांव नहीं रखता था

नीलम खुशी से फूली न समाई, कहने लगी

—गुल बहुत अच्छा है ना !

—अब तो उसे गांव का बच्चा बच्चा अच्छा कहेगा

शाह ने सिर हिलाते हुए कहा ।

नीलम मुंह बना कर बोली—अब्बा वह तो मुकाबले के लिए तैयार ही नहीं था

—अच्छा ! शाह हैरान हो गया ।

—हाँ अब्बा । वह पास आकर कहने लगी—मैंने बड़ी मुश्किल से उसे राज़ी किया था

—तुमने ! शाह चौकन्ना हुआ—तुम्हारा उससे क्या वास्ता ?

अब्बा ! वह लजा उठी, जाते जाते कहती गई—वह मुझसे......

आगे कुछ न कह सकी । अन्दर कमरे में भाग गई ।

शाह की अंगुलियां दाढ़ी के बालों को बल देने लगीं । वह सब कुछ समझ गया । गुल उससे शादी करना चाहता है और दोनों एक दूसरे से मिलते भी हैं ।

नीलम कमरे में घबरा रही थी । उसने द्वार अन्दर से बन्द कर लिये थे । अनजाने में उसके मुंह से निकल गया था । उसे डर भी था कहीं अब्बा पिटाई न कर दें वह अपने आपको कोस रही थी । क्यों उसने अपने मुंह से सब कुछ कह दिया ? अगर अब्बा ने गुस्से में आकर इन्कार कर दिया तो......

नीलम कांप गई । दिल की धड़कन बढ़ गई । द्वार के सूराख से देखा, अब्बा सर झुकाये बैठा था । उसे और डर लगने लगा ।

अब्बा की चुप्पी ने उसे उलझन में डाल दिया । वह सूराखों से बराबर झांक रही थी । शाह सिर झुकाए किसी गहरी सोच में उलझा था । अचानक

उसने सर उठाया। नीलम दिल पर हाथ रखकर खड़ी हो गई।

द्वार पर दस्तक हुई, शाह का स्वर गूँजा—नीलम, द्वार खोल

वह चुप खड़ी रही। शाह ने फिर हांक लगाई। नीलम समझ गई, अब्बा यह शादी मानने को तैयार नहीं, आँखों में आँसू आ गये। शाह कुछ ज़ोर से बोला, तो वह सिसक पड़ी।

शाह ने सिसकी सुन ली, कहने लगा—द्वार तो खोल। उसने डरते-डरते दरवाजा खोला, सामने बाप खड़ा था। तना हुआ चेहरा, आंखों में गुस्सा देख वह पीछे हट गई।

शाह ने वहीं खड़े-खड़े पूछा—यह बात और कौन-कौन जानता है ?

वह सिर झुकाये जल्दी से बोल पड़ी—बानो

—और कोई

—और किसी को नहीं पता। वह भर्राई आवाज में बोल पड़ी।

शाह कुछ और कहना ही चाहता था कि बाहर से बहुत से लोगों के नारे की आवाजें आई। लोग उसे पुकार रहे थे। वह बेटी को उसी हालत में छोड़ बाहर आया, द्वार खोले। लोग गुल को ऊपर उठाये हुए थे, वह फूलों से लदा हुआ था। शाह को देखकर गुल नीचे कूद पड़ा, बड़े अदब से शाह का हाथ चूमकर बोला

—मेरी कामयाबी आपकी कामयाबी है, आप मेरे बुजुर्ग हैं

शाह ने उसका अदब देखा, सलूक देखा, तो मुस्करा कर गले लगा लिया। फिर एक कोलाहल मच गया। वह गुल को लेकर भीतर आया। सामने नीलम खड़ी थी। उसने देखा, गुल को अब्बा अंकवारों में भरे आ रहा है। पल भर में इतनी प्रसन्न हुई कि उसने आज तक इतनी खुशी का अनुभव कभी नहीं किया था।

शाह बेटी की ओर मुड़ा—नीलम, गुल के लिये शरबत लाओ

वह भागी-भागी गई, एक बड़े से बरतन में ढेर-सा शरबत भर लाई। शाह ने गुल को मुबारकबाद दी। उसकी बहादुरी की प्रशंसा करते हुए कहा कि दूसरे गांव वाले अब इसलिये हमारे गांव की इज्ज़त करेंगे कि हमारे पास सबसे अच्छा निशाना लगाने वाला नौजवान है।

शाह ने यह भी बताया कि इस साल निशाने के मुकाबले में दूर-दूर के लोग शामिल थे। अज्जू के हारने का डर था लेकिन गुल ने गांव की लाज रख ली। नीलम दूर खड़ी सब-कुछ सुन रही थी। बाप के मुंह से गुल की प्रशंसा सुनी तो गुल को नज़र भर देख न सकी।

कुछ देर बाद गुल शाह से मिलकर वापस आ गया। नीलम को विश्वास हो गया, अब्बा को इन्कार नहीं। अगर ऐसा होता तो वह गुल से कभी गले नहीं मिलता और फिर उसने मुझ से भी तो कुछ नहीं कहा।

दो दिन रहने के बाद नूर शहर लौट गया। गुल ने सेवा-सत्कार में कसर न छोड़ी। दोनों में बड़ी पुरानी मित्रता थी, एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे। वह एक-दूसरे से दूर अवश्य रहते थे लेकिन दुख-सुख में बराबर साथ देते रहे। कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि एक-दूसरे के दुख-सुख में साथ न दिया हो, एक ने दूसरे की सहायता न की हो। एक अटूट और गहरी मित्रता थी।

निशाने का मुक़ाबला जीतने के बाद गांव में गुल की बड़ी इज्ज़त हो गई, अच्छी धाक जम गई, गांव की कई कुमारिकां ब्याह की इच्छुक बन गईं लेकिन गुल को नीलम के सिवा किसी की इच्छा न थी।

नीलम जब सुनती कि अमुक अपनी बेटी के विवाह के लिये गुल के पास आया है तो मुँहफट बन जाती। सैकड़ों गालियां बकती, कोसती। उसने गुल को भी मना कर दिया कि वह किसी से शादी की बात न करे।

अज्जू दिल ही दिल में कुढ़ता रहा। वह खुले तौर, बड़ी बुरी तरह से हर बाज़ी में मात खा चुका था। अब बदला लेने की ताक में लगा रहता। गुल भी नादान नहीं था, हर समय चौकन्ना रहता। अपनी राईफल कंधे पर लटकाए रखता। वह जानता था अज्जू डरपोक है, किसी दिन अचानक वार न कर दे।

एक दिन गुल पगडंडी पर अकेला जा रहा था। सामने से सरपट दौड़ता घोड़ा आता दिखाई दिया। गुल पगडंडी से हटकर खेत के किनारे खड़ा हो गया। घोड़ा उसके पास रुका। अज्जू ने ऊंचे स्वर में कहा

—मेरा रास्ता छोड़ दो

—रास्ता खुला है। उसने पगडंडी की ओर संकेत किया।

अज्जू दांत पीस कर कहने लगा—मेरा इशारा उस रास्ते की ओर है जो शाह के घर जाता है

—हूं! वह व्यंग-भरी मुस्कान से बोला।

—उस रास्ते पर अर्से से किसी का क़ब्ज़ा हो गया है

—कौन है वह? अज्जू ने पूछा।

—जो तुम्हारे सामने खड़ा है। गुल का उत्तर था।

—तुम शेर से लड़ने चले हो गुल! अज्जू ने ललकारा।

—मैं शेर को मेले में नीचा दिखा चुका हूं। गुल ने उसी स्वर में कहा।

अज्जू ने घोड़े की लगाम खींची—देख लूंगा

गुल ने राइफल उठाया—दिखाने के लिये मैं हर वक्त तैयार हूं

अज्जू ने घोड़े को एड़ लगाई और नज़रों से ओझल हो गया।

गुल उससे टकराना नहीं चाहता था लेकिन अज्जू उसे मजबूर कर रहा था। गुल जानता था कि वह नम्बरदार का बेटा है।

उस दिन के बाद गुल और सावधानी से रहने लगा। अब वह बाग़ में एक आदमी को साथ लेकर सोने लगा था। उसे भय था अज्जू अकेला पाकर कहीं रात में हमला न कर दे। आधी रात वह जागता, आधी रात उसका साथी। और जिस रात नीलम आ जाती वह रात बातों ही बातों में कट जाती।

एक बार फिर अज्जू से उसका सामना हुआ। अज्जू ने उसे मजबूर किया

कि वह उसका रास्ता छोड़ दे। थोड़ी तूतू-मेंमें के बाद पहले की तरह अज्जू फिर चला गया। गुल सोचने लगा यह कब तक होता रहेगा। नीलम को उसने कुछ नहीं बताया। वह जानता था नीलम रोने लगेगी।

एक दिन अवसर देखकर शाह को सारी बात सुना दी कि मेले में मुक़ाबला जीतने के बाद अज्जू उसका दुश्मन हो गया है। नीलम ने भी उसकी शिकायत की।

शाह भड़क उठा, उसने गरज कर कहा—फ़िक्र न करो गुल! जब तक मुझ में साँस है नम्बरदार का बाप भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

और दूसरे दिन ही शाह ने नम्बरदार से मिलकर अज्जू की शिकायत की। नम्बरदार आन पर मिटने वाला आदमी था। जब उसे मालूम हुआ कि उसका बेटा मुकाबले में हारने के कारण गुल का शत्रु बन गया है तो उसने वादा किया कि आइन्दा कोई बात नहीं होगी, वह अज्जू को समझा देगा।

इस घटना के बाद शाह को गुल पर इतना तरस आया कि वह सचमुच गुल का संरक्षक बन गया। उसे दिलासा दिलाया कि वह कोई चिन्ता न करे। दोनों के सम्बन्ध गहरे हो गये, शाह ने उसे अपना बेटा बना लिया और दबे-छुपे शब्दों में यह भी बता दिया कि वह अपनी बेटी का ब्याह उसी से करेगा।

नीलम दीवानी हो गई, दूला पीर की कब्र पर घी के दीये जलाये, न्याज बांटी। खूब जी-भर के सखियों को गुड़-चने खिलाए। बाबा मान गया। इससे बढ़कर उसे और क्या खुशी हो सकती थी कि उसके मन-मन्दिर का देवता अब उसका अपना बनने वाला है।

दिन इसी तरह बीत रहे थे। अब अज्जू ने राह चलते गुल से छेड़खानी छोड़ दी थी। कभी-कभार सामना हो जाता तो दोनों चुपचाप निकल जाते। नीलम को ज्ञात हुआ कि अब अज्जू अपनी पहले जैसी करतूतों से अलग हो गया है तो अल्लाह की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

चाँद अपनी पूरी जवानी में चमक रहा था। शाह की आंख अभी नहीं लगी थी। आज उसे गुल से मिलने जाना था। विलायती चीनी का हलवा बना सिरहाने रख लिया था। जब से उसने जाना था कि अब्बा को गुल से ब्याह स्वीकार है, वह चहकने लगी थी। दिन पर दिन उसका रंग निखरने लगा था। सदा प्रसन्न रहने से वह कुछ और स्वस्थ हो गई थी। गालों की लाली बढ़ गई थी और यह सब-कुछ गुल का प्रेम था जिसने उसका जीवन-रंग बदल डाला था।

कुछ देर बाद शाह सो गया। नीलम चुपके से उठी, हलवे का कटोरा उठाया, धीरे से द्वार खोला, जल्दी से बाहर निकली। आज वह कई दिन बाद गुल से रात में मिलने जा रही थी। प्रेममिलन की मदिरा ने अपना रंग जमा लिया था।

गुल पहले की तरह बाढ़ से बाहर खड़ा पगडंडी निहार रहा था। दोनों ने एक-दूसरे को देखा, आगे बढ़े, मिले और लिपट गये।

—मैं तुम्हें ही देख रहा था

—गुल ! प्रेम का सागर छलका—यह इन्तज़ार कब खत्म होगा ?

—इन्तज़ार की घड़ियाँ बड़ी मीठी होती हैं। गुल ने एक गहरी साँस ली—बस जल्दी, ही आओ चलें, चबूतरा तुम्हें कई दिन से पूछ रहा था।

नीलम इस बात पर हँस दी। दोनों धीरे-धीरे कुंज में पहुँचे, चबूतरे पर बैठकर नीलम ने कटोरे पर से कपड़ा उतारकर गुल की ओर देखा।

—लो खाओ

—क्या है ?

—हलवा

—क्यों तकलीफ़ करती हो नीलम ?

—खाओ न। वह चट बोल पड़ी—इतनी मेहनत से बनाती हूँ और तुम नखरे करते हो।

गुल ने निवाला उठाया, उसके मुँह की ओर बढ़ाकर मचलने लगा—पहले तुम खाओ

नीलम ने मुँह खोला गुल ने निवाला रखा। फिर वह गुल को खिलाने लगी। छोटे-छोटे निवाले एक-दूसरे को खिलाते रहे, बातें होती रहीं।

कटोरा खाली हुआ। गुल मस्त निगाहों से उसे देखने लगा। वह लजा गई। कहने लगी—कोई देख रहा है

—कौन ! गुल जल्दी से इधर-उधर देखने लगा। फिर खुलकर हँस पड़ा, चाँद की ओर उँगली उठाकर कहा—वह देख रहा है

—हूँ। गुल ने सन्तोष की साँस ली—चाँद के पास न जाने कितने लोगों का भेद है, लेकिन यह चुगली नहीं करता, सबका राज़ सीने में छुपाए सदा मुस्कराता रहता है

नीलम मटक कर कहने लगी—मुझे बहुत सताता है यह

—क्या कहता है ?

—रोज़-रोज़ यही कहता है कि···नीलम ने चाँद को देखा, रुकी, फिर धीरे से बोली—अपने गुल के पास जाओ। सोती हूँ, यह जगा देता है, एक पल भी सोने नहीं देता

—इसकी बात मान जाया करो नीलम

—इसकी परवाह कौन करता है, मेरा तो दिल ही मुझे हर समय कहता रहता है

दोनों एक दूसरे से सिर जोड़े प्यार भरी बातों में मग्न थे। चाँदनी चुप, हवा चुप, पत्ता-पत्ता चुप था। ये दोनों अपनी न खत्म होने वाली बातें एक-दूसरे को सुना रहे थे। दिल की हाथों मजबूर, प्रेम करने वाले अपना प्रेममयी संसार बसाये हुए थे।

गुल को वह मजबूर करने लगी कि वह उसके अब्बा से ब्याह की बात छेड़े। वह जान तो गये हैं ही। गुल ने बताया कि अब उसके पास-पाँच हज़ार रूपया जमा हो गया है, इस फ़सल के आरम्भ तक एक हज़ार और हो जायेगा, फिर बड़ी धूम-धाम से व्याह रचाएगा।

प्रिय किसी बात पर सन्तोष दे और प्रिया को विश्वास न हो, दिलासा न मिले —यह प्रीत की रीत नहीं। नीलम को जब वह तसल्ली देता तो ऐसा मालूम होता, मानो गुल ने सारे ज़माने की सहानुभूति उसके सामने ला ढेर कर दी है।

वह भावुकता से अन्धी होकर उसके सीने पर सिर रखे निश्चिन्तता की गहरी सांस लेती जैसे उसे अब कोई चिन्ता नहीं। गुल की एक-एक बात में उसे ऐसी प्रसन्नता मिलती जिसका जीवन में कभी अनुभव नहीं हुआ था।

आशाओं का संसार, प्रीतम के साथ होने का सुख, नीलम उन्मादी हो जाती। वह उसके बाहुपाशों में लिपट जाती।

संसार शून्य हो जाता।

बैठे-बैठे रात बीत गई। कुछ जान न पड़ा समय कितना बीता, कब बीत गया। अँधेरा छटने लगा। नीलम ने घर जाने की अभिलाषा प्रकट की। गुल

का दिल तो न चाहता था लेकिन दोनों की मर्यादा का प्रश्न था। शाह की इज़्ज़त का प्रश्न था। कहने लगा—चलो तुम्हें बाढ़ तक छोड़ आऊँ।

नीलम अनमनी-सी हो गई—तुमसे अलग होते वक्त आंसू आ जाते हैं

—पागल। गुल हंसकर बोला—अब यह जुदाई खत्म होने वाली है

वह हाथ में हाथ दिये बाढ़ तक आये। नीलम आँसू भरे नयनों से जा रही थी, मुड़-मुड़ के पीछे देख रही थी। गुल भाव शून्य खड़ा देखता रहा जब तक वह दिखाई देती रही। वापस आया, नमाज़ का समय हो गया था। जा-नमाज़ बिछाई, नमाज पढ़ी, दुआ मांगी और वहीं सो गया।

एक दिन नीलम घर में बैठी काम-काज में व्यस्त थी। शाह प्रातः ही खेतों पर गया था। दोपहर हो चली थी। जल्दी-जल्दी वह खाना बनाने में लीन थी कि दरवाजे पर खट-खट का स्वर सुनाई दिया। द्वार खोला तो सामने हलवाहा खड़ा था।

घबराई हुई आवाज़ निकली—शाहजी, शाहजी

—क्या हुआ अब्बा को ? वह रोआंसी हो गई।

—जल्दी बताओ

हलवाहा संतुलित स्वर में बोला—शाहजी बेहोश हो गए हैं

—कैसे ? नीलम घबरा उठी।

हलवाहे ने उसे बताया कि खेतों में काम करते-करते अचानक वह गिर पड़े और अब तक बेहोश हैं। वह सन्नाटे में आ गई। पथराई निगाहों से हलवाहे को देखा और फिर चीख मारकर नंगे पाँव खेतों की ओर भागी।

हलवाहा बाहर से द्वार बन्द कर पीछे-पीछे हो लिया। नीलम तेजी से भाग रही थी। कुंज के पास पहुँची तो गुल ने देख लिया। ज़ोर से पुकारा—नीलम, नी···लम !

—गुल। वह सिसककर बोली—अब्बा को कुछ हो गया है और फिर दोनों बिना कुछ कहे-सुने खेतों की ओर भागे। वह रोती जा रही थी, वह सान्त्वना दे रहा था लेकिन उसका हृदय स्वतः भय से ओत-प्रोत हो रहा था कि अगर अब्बा को कुछ हो गया तो नीलम वह शोक सह सकेगी और शाह···

से उसे भी कुछ प्रेम तो था ही।

वे खेतों के पास पहुँचे। शाह के आस-पास बैठे कुछ लोग उन्हें होश में लाने का प्रयत्न कर रहे थे। गुल ने पेड़ से घोड़े की लगाम खोली और सरपट दौड़ाता हुआ गाँव के हकीम के पास पहुँचा, उसे साथ ले वापस लौटा।

हकीम ने माथे पर दवाई लगाई, कुछ सुँघाता रहा, मुँह पर पानी के छींटे दिये। कुछ ही देर में होश तो आ गया लेकिन कमज़ोरी के कारण उठ न सका। हकीम ने बताया, उसे दिल का दौरा पड़ा है। नीलम रोने लगी। गुल ने खेतों में काम करने वालों की सहायता से शाह को खाट पर लिटा दिया। लोग घर ले जाना चाहते थे लेकिन हकीम ने मना कर दिया। धूप तेज़ थी। लोगों ने खाट उठाई और पेड़ों की घनी छाँव तले बिछा दिया।

शाहजी को होश आ चुका था। वह परेशान होकर इधर-इधर देखने लगा। नीलम भी आई, बाप से लिपटकर रोने लगी। शाह अचम्भित हो गया।

—क्या हुआ, मैं ज़िन्दा हूँ नीलम!

—अब्बा

नीलम रोती रही। गुल हकीम से बातें कर रहा था। हकीम को छोड़ जल्दी से पास आकर कहने लगा

—अब्बा तुम बेहोश हो गये थे

शाह मुस्करा दिया, बेटी के सिर पर हाथ फेरते हुए बोला

—कोई बात नहीं नीलम योंही ज़रा गर्मी से चक्कर आ गया होगा

पल-पल पर शाहजी की हालत सुधरने लगी। गुल उसे छोड़कर हकीम के

पास चला गया। हकीम ने बताया कि गर्मी का असर दिमाग पर है। फिक्र की कोई बात नहीं। उसने एक नुसखा लिखकर दे दिया। गुल ने उसे संभाल कर बास्कट की जेब में रखा।

दोपहर ढलते-ढलते शाहजी की हालत भी सुधर गई। हकीम जा चुका था। गुल धूप की कमी की प्रतीक्षा में था। सूरज की किरणें तिरछी हो गई तो शहजी की चारपाई उठाई गई। लोग घर की ओर ले चले। नीलम भी उनके साथ थी।

घर पहुंच कर नीलम ने जल्दी-जल्दी बिस्तर बिछाया। दो आदमियों ने मिलकर शाहजी को लिटा दिया। सन्ध्या हो चुकी थी, गर्मी कम हो गई थी। शाहजी ने खाट पर लेटे-लेटे गुल की ओर देखा। आँखों से प्रेम छलका।

—गुल, मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूं

—किस बात का बाबा ? गुल ने मुस्करा कर कहा।

—वक्त पर तुमने मदद नै की होती तो न जाने क्या होता ?

नीलम चूल्हे से उठकर पास आई—इसे तो अब्बा; मैं ले आई थी

—अच्छा ! शाह मुस्करा पड़ा—खुदा का शुक्र है मेरी जान बच गई

नहीं बाबा ! गुल जल्दी से बोल उठा—ऐसी तो कोई बात नहीं थी। जरा गर्मी से चक्कर आ गया था। हकीम भी यही कह रहा था

—हां बेटे। शाह ने गहरी सांस ली—मैं सुबह से धूप में खड़ा था

एक आज्ञाकारी पुत्र की भाँति गुल ने कहा—अब ज्यादा मेहनत न किया करो अब्बा

—बेटे जब तक जिन्दगी है मेहनत तो छूट नहीं सकती। शाहजी ने धीमे स्वर में कहा और फिर चिन्तित होकर आँखें मूंद लीं—डरता हुं, मेरी मौत बाद इसका क्या होगा ?

—खुदा से दुआ मांगिये बाबा ! गुल धीरे से बोला—अभी तो हमें

अपकी जरूरत है ।

कुछ देर बातें होती रहीं। दिन ढल चुका था। सन्ध्या की स्याही धीरे-धीरे फैल रही थी। गुल को नुसखे का ख्याल आया। नीलम को बताकर वह घर से निकला।

हकीम की दूकान से दवाइयां लीं और जल्दी से वापस हुआ। हकीम ने शरबत और कुछ जड़ी-बूटियां भी दी थीं जिन्हें पीसना था। गुल एक खुराक शाहजी को पिलाकर नीलम से बोला

—जल्दी से खरल ले आओ

—क्यों ? नीलम अचम्भित हुई।

—दवाई पीसनी है। गुल होंठों में मुस्करा पड़ा।

—तुम पीसोगे

वह पास आकर धीरे से प्यार से बोली—लाओ मैं पीस देती हूं

गुल उसका हाथ झटक कर बोला—तुम घर का दूसरा काम करो

नीलम को हंसी छूट गई। कहने लगी—मर्द ऐसे काम नहीं करते

गुल ने उसी स्वर में उत्तर दिया—जरूरत के वक्त सब कुछ करना पड़ता है

नीलम को दिल्लगी सूझ रही थी। ज़िद करते हुए बोली—नहीं, मैं पीसूंगी

वह बैठ गया। हंसकर बोला—अच्छा लावो, दोनों मिलकर पीसते हैं

नीलम इठलाती हुई मुस्करा कर उठी। खरल लेकर वापस आई। दोनों आमने-सामने पालथी मार कर बैठ गये। सूखी बूटियां खरल में डाल कर गुल कूटने लगा। शाह कुछ पग दूर खाट पर लेटा आसमान निहार रहा था और ये दोनों अपनी बातों में लीन थे।

शाह दिल ही दिल में गुल की प्रशंसा कर रहा था। वह देख रहा था कि गुल बड़ी लगन से कभी हकीम के पास कभी इधर-उधर भाग रहा था। स्वयं अपने हाथों से दवाई पिला रहा था। खेतों से आते समय भी उसने देखा था

कि गुल ने काफ़ी दूर तक चारपाई को कंधा दिया था ।

यह प्राकृतिक है बीमारी की हालत में थोड़ी-बहुत तीमारदारी भी रोगी के लिये बहुत सहायक सिद्ध होती है और तीमारदार के प्रति सद्भावना स्वतः उत्पन्न हो जाती है । शाह के हृदय में भी यही बात थी । गुल अगर उसके लिये भाग-दौड़ न करता तो उसे कुछ भी शोक न था । लेकिन ऐसे समय पर गुल की सहायता और सहानुभूति ने शाह के दिल में गुल के लिये जगह पैदा कर ली थी ।

शाह खुले शब्दों में यह व्यक्त भी कर चुका था । नीलम प्रसन्न थी कि उसका बाप उसके प्रीतम के प्रति आभारी है । उसे प्यार-भरी दृष्टि से निहारता है । नीलम के लिये इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती थी !

कुछ देर बाद दवाई तैयार हुई । शरबत का एक गिलास और दवा लेकर वह शाह के पास गया । मीठे स्वर में बोला—बाबा दवाई पी लो

—हूं । शाह किसी विचार से चौंक गया—तुम कितनी तकलीफ कर रहे हो गुल ! वह हिचकिचा कर कहने लगा ।

—तुम्हारी खिदमत तो हमारा फ़र्ज है बाबा

—हां बेटे ! शाह ने एक गहरी सांस ली ।

—खुदा तुम्हारी उम्र दराज़ करे !

गुल से हट कर नीलम खड़ी थी, अचानक गुल ने उसे देखा, नयन टकराए, दोनों हंस दिए । गुल की मुस्कान शाह ने देख ली । शरबत का गिलास थाम वह पूछ बैठा—क्या बात है गुल ?

—जी...बाबा...वह। गुल जल्दी से घबरा कर बोला—नीलम कह रही है...फिर रुक गया, समझ में नहीं आया क्या कहे।

शाह ने आश्चर्यचकित हो पूछा—क्या कह रही है ?

—कह रही है मैं बुद्धू हूं

—अरे ! शाह ने कोप भरी दृष्टि नीलम पर डाली।

—क्या कह रही है पागल ! तेरा भाई होता तो भी मेरी इतनी खिदमत न करता

नीलम सिटपिटा गई। उसने कोई उत्तर न दिया। गुल की ओर देखा, उसने इशारे से समझा दिया। वह बात बनाते हुए बोली—अब्बा मैं तो कह रही थी आज बुध का दिन है

गुल बात को समाप्त करने के लिये जल्दी से बोला—मैंने गलत सुना होगा

—गुल बेटे ! शाह प्यार से बोला—तुम इसकी बातों का बुरा न माना करो। अभी नादान है ना !

गुल होंठों में मुस्करा पड़ा। शाह की नज़र बचा कर नीलम की ओर देखा मानो कह रहा हो, मैं खूब जानता हूं यह कितनी नादान है।

शाह की हालत संभल गई थी फिर वार्तालाप की गाड़ी चली। नीलम भी बाप की खाट पर आ बैठी।

रात हो गई। शाह ने हकीम की राय के अनुसार हल्का खाना खाया। गुल और नीलम ने भी खाना खा लिया। नमाज़ का समय हो चला था। दोनों ने साथ ही साथ नमाज़ पढ़ी। फिर शाहजी के पास आकर बैठ गये।

—बेटा गुल, रात काफ़ी गुज़र चुकी है, अब तुम घर जाकर आराम करो

—नहीं बाबा, इस हालत में छोड़कर मैं नहीं जाऊंगा। गुल ने इन्कार किया। अनुग्रहीत होते हुए शाह ने फिर मजबूर किया लेकिन वह राज़ी न हुआ। इस बात ने शाह के दिल में गुल के लिये और अधिक घर बना लिया।

गुल उठकर उसकी खाट पर जा बैठा और पांव दबाने लगा। नीलम भी आ गई और साथ बैठकर पाव दबाने लगी।

कुछ देर बाद शाह सो गया। नीलम ने अलग-अलग चारपाइयों पर दो बिस्तर बिछाए—एक अपने लिये और दूसरा गुलके लिये। दोनों को नीद दबोच रही थी। खाट पर लेटते ही दोनों गहरी नीद में डूब गये।

सुबह तड़के गुल की आंख खुली। नीलम अभी सो रही थी। उसने उठकर शाह बाबा को देखा। वह निश्चिन्त सो रहा था। शरबत गिलास में डाल कुछ पानी मिलाया। शाह को हौले से जगाकर कहने लगा—अब्बा दवाई पी लो

शाह एक बार जाग कर फिर सो गया था। गुल ने जगाया तो उठकर बैठ गया। जम्हाई ले कहने लगा

—अब तो मेरी तबीयत काफी ठीक हो गई है

—अल्लाह की रहमत है। गुल मुस्कराया।

शाह ने पहले खुराक, फिर शरबत पिया। गुल का सहारा लेकर नीचे उतरा। एक पग आगे बढ़ा, फिर खड़ा हो गया, कुछ दूर चला और यह देखकर खुशी से चिल्ला उठा कि उसका स्वास्थ्य फिर जैसा का तैसा हो गया है। शाह ने बाहर जाने की इच्छा प्रकट की लेकिन गुल ने रोक लिया। हकीम ने भी यही कहा था, अभी उसे कुछ दिन आराम की आवश्यकता थी। कमजोरी के कारण ही गश आया था। अब आराम न करने से बीमारी बढ़ सकती थी। शाह ने दो-चार बार कहा कि वह अब अच्छा-भला हो गया है लेकिन गुल उसे बाहर जाने नहीं देता था। वह बात कर ही रहे थे कि नीलम की आंख खुल गई।

चारपाई से उठकर वह पास आई, पहले गुल को देखा फिर अब्बा से

पूछा—क्या बात है अब्बा ?

—देखो बेटी ! शाह खुशी से बोला—मैं बिलकुल अच्छा हो गया हूं, अब क्यों आराम करूं ?

—नहीं अब्बा, अभी आराम की जरूरत है। गुल ने विनय की।

नीलम को जब सब बात मालूम हुई तो उसने भी बाप को यही राय दी कि आज का दिन तो आराम करले। शाह फिर चारपाई पर लेट गया। नीलम घर के काम-काज में व्यस्त हो गई। गुल नमाज पढ़ने मोहल्ले की मस्जिद में चला गया। वापस आया तो नीलम क़हवा बना चुकी थी। हकीम ने शाह को क़हवा मना किया था, वह दोनों पीने बैठ गये।

दिन चढ आया तो गुल हकीम के पास चला गया। हाल कहा कि रात आराम की नींद आई है। हकीम ने और दवाई दी, हिदायत की कि दो दिन यह दवाई और खिलाई जाय। दूध, मक्खन भी जितना हो सके दिया जाय।

दूध मक्खन की क्या कमी थी ! वह तो दिया ही जा रहा था। दवाई नीलम के हवाले करके गुल अपने बाग़ में आ गया। उसने कल से बाग़ नहीं देखा था। आते समय वह कह आया था कि दोपहर होते ही वापस आ जायेगा और खाना नीलम के संग ही खायेगा।

गुल चला गया। नीलम दवाई पीसने बैठ गई। शाह लेटे-लेटे फिर सो गया। दवाई पीसते-पीसते उसे कल का दिन याद आया जब गुल सामने बैठा था। हाथों पर हाथ रखे दोनों दवाई पीस रहे थे। वह अकेले बैठे बोर सी हो गई।

नीलम खाना बनाकर कुछ बेचैनी से गुल की प्रतीक्षा में थी। दोपहर हो चुकी थी लेकिन वह अभी तक नहीं आया था। उसने तो दोपहर से पहले आने का वादा किया था ?

कुछ देर बीता तो शाह को भी देरी का अनुभव हुआ। गुल उसके

सामने ही आने को कह गया था। बेटी को चुप देख शाह ने पूछा—गुल क्यों नहीं आया अभी तक ?

—जाने क्या बात हो गई अब्बा ! वह बुझे दिल से बोली।

—कोई काम आ पड़ा होगा

—वह वादा करके गया है। नीलम ने मुँह बनाकर कहा।

शाह हंस दिया—गुल बड़ा अच्छा लड़का है

उसका कहना था कि नीलम का दिल बल्लियों उछलने लगा। गुल की प्रशंसा सुनते ही उसके बदन में खुशी की लहर-सी दौड़ जाया करती थी। आँखों में लज्जा की लकीरें उभर आया करती थीं।

वह दोनों बातें कर रहे थे। आहट पाकर नीलम ने द्वार की ओर देखा। खुशी से चिल्ला उठी

—अब्बा, गुल आ गया

शाह खुलकर हंस पड़ा—बड़ी लम्बी उम्र है भई।

वह पास आकर बोला—बड़ों की दुआ हो तो उम्र दराज़ हुआ ही करती है

शाह उसके लिये अपनी चारपाई पर जगह बनाते हुए कहने लगा—हम तुम्हारी ही बातें कर रहे थे

गुल मुस्कराता हुआ खाट पर बैठ गया। नीलम तुरन्त खाना लाई। गुल ने एक नज़र खाना देखकर कहा—मालूम होता है यहाँ कोई मेहमान आया है।

—मेहमान ! शाह बोल पड़ा हैरानी में—हमारे यहां तो कोई मेहमान नहीं आया है

गुल ने खाने की ओर संकेत किया

—यह पुरतकल्लुफ खाने किसके लिये पके हैं

नीलम ने धीमे स्वर में कहा—मैंने खुद पकाये हैं

शाह अपना परहेज़ी खाना लेकर बैठ गया और वह दोनों अलग खाने

लगे । तीनों के चेहरे पर खुशी दौड़ रही थी । हंसी-खुशी खाना खाया जा रहा था ।

खाकर गुल कुछ देर बातें करता रहा फिर बाग से लौट आया ।

नीलम बाप को दवाई पिलाकर बैठी ही थी कि लोग शाहजी की मिज़ाज पुरसी के लिये आने लगे । गाँव भर को मालूम हो गया था कि शाह बीमार है ।

दो दिन बीत गये । शाह की तबियत संभल गई । अब वह अच्छी तरह चलने फिरने लगा था । दोनों वक्त नमाज़ भी पढ़ने लगा था । नीलम बाप को स्वस्थ देख बड़ी प्रसन्न हुई । गुड़ चने मिलाकर गाँव भर में बांट आई ।

कुछ दिनों बाद शाह पहले की तरह फिर खेतों पर जाने लगा। गुल अपने अपने कुंज में काम पर लग गया। शाह की बीमारी ने जहां दुख दिया वहां नीलम और गुल की मुहब्बत को सहारा भी दिया। शाह के दिल में गुल के लिये बहुत अधिक सहानुभूति पैदा हो गई।

इस बीमारी ने शाह को सब कुछ समझा दिया था। शाह ने दुनिया देखी थी। दोनों के प्रेम से परचित हो गया था। शाह अपने आप में खुश था कि गुल में कोई कमी नहीं। वह अच्छे-खासे फलों के एक बड़े बाग़ का मालिक है। हर साल उसकी आमदनी बढ़ रही है।

एक ओर तो बेटी उस पर मस्त थी, दूसरे शाह का भी उससे लगाव हो गया था। इस बीमारी में गुल ने जी तोड़कर सेवा करके शाह को मोह लिया था। शाह उसे दिल से चाहने लगा था।

अब गुल से उसका सम्बन्ध ऐसा हो गया था जैसे गुल उनके घर का ही एक सदस्य हो और बात इससे भिन्न थी भी नहीं। अन्तः कारण से गुल उनके घर का एक आदमी बन चुका था। शादी की बात हृदय में बैठ चुकी थी केवल मुँह से निकलने की देर थी।

शाह, नीलम और गुल—सब अपनी जगह सब कुछ समझ रहे थे। एक हृदय दूसरे हृदय की भावनाओं से परचित था। एक दूसरे की कामनाओं को भांप चुके थे। लेकिन जबान पर किसीके कोई बात नहीं थी। गुल और नीलम सैकड़ों बार आपस में बात कर चुके थे और यह जानकर दोनों बहुत खुश थे

कि शाह को उनके प्रेम का ज्ञान है और सब कुछ जानने पर भी शाह के माथे पर बल नहीं। वह पहले की तरह ही मीठे बचन बोलता है, वैसे ही व्योहार में प्रेम भी है।

इसका मतलब साफ़ था कि शाह को दोनों के मिलाप पर विरोध नहीं। वह भी वही कुछ चाहता है जो ये दोनों चाहते हैं। हर प्रेम करने वालों की तरह वह दोनों भी अपने भविष्य मे सन्तुष्ट थे और इसी कारण खुश भी थे। गुल अब दूसरे तीसरे दिन शाह के घर जाने लगा था। बातें करता और वापस चला आता।

सबका जीवन बड़े आराम से कट रहा था। नीलम उसी तरह रातों को गुल से मिलने जाती और प्रेम में प्रकाशित हृदय लिये अपने जीवन से सुखी थी। प्रीतम पास था, अब्बा का विरोध नहीं, गुल जान छिड़कता था। नीलम को और क्या चाहिये था!

इस साल बड़े जोर की वर्षा हुई। गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। सब फ़सलों के अच्छी होने की आशा हो चली थी और गुल के बाग में तो अबकी बार इतने फल लगे कि उसने अपने जीवन में इतना कभी नहीं देखा था।

उसने शहर से खाद मंगवाकर डाला था। उसे इस बात की आस अवश्य थी कि फ़सल अच्छी होगी लेकिन इतनी अच्छी फ़सल होने की आशा किसी को भी न थी। पूरे गांव में खुशियां मनाई जा रही थीं।

नीलम यह सोचती कि यह सब उसकी दुआओं का परिणाम है। वह कब

से मिन्नतें मान रही थी। हर रोज़ अल्लाह से ुआ मांगती थी। इसीलिये गुल की फ़सल बड़ी अच्छी हुई है। गुल को अच्छी रक़म मिलेगी और धूमधाम से शादी होगी।

वह अपनी सखियों के पास बैठती तो अपने ब्याह की चर्चा खूब मज़े ले लेकर करती। अब अगर बानो उसे छेड़ती तो वह ज़रा भी बुरा न मानती, उल्टा उससे बढ़-चढ़कर बातें करती। उसकी सब सहेलियां उसके और गुल के सम्बन्ध को जान गई थीं। सहेलियां उसे रशक भरी नज़रों से देखतीं।

फ़सल कटना शुरू हुआ तो गुल को अनुमान हो गया कि इस साल भाव भी कुछ अच्छा है, उसे काफ़ी रकम मिलेगी। पहली खेप शहर के लिये तैयार हुई तो उसने स्वयं शहर जाने का निर्णय किया। जब सब तैयारी पूरी हो गई तो नीलम को बुला भेजा।

नीलम कुंज में पहुंची। गुल ने उसे पास बिठाकर बताया कि फसल अच्छी है और भाव भी तेज़ है, अतः वह मण्डी देखने स्वयं शहर जा रहा है। नीलम ने सुना तो दुखी होकर कहने लगी

—न गुल, तुम न जाओ

—तुम घबराओ नहीं, तीन चार दिन में मैं आजाऊंगा। बड़े प्यार से गुल ने समझाया।

—गुल, शहर बहुत दूर है। वह घबराई हुई बोली।

गुल ने उसे सीने से लगा लिया—फिर क्या हुआ, मैं तुम्हारे ही लिये

तो जा रहा हूं, ज्यादा रक़म मिलेगी तो शादी धूम-धाम से होगी। और फिर चार ही दिन की तो बात है

—गुल...वह रोने लगी। गुल उसे तसल्ली देने लगा। नीलम भयभीत हो रही थी, यद्यपि वह शहर नहीं गई थी लेकिन उसने सुन रखा था, शहर बहुत दूर है और रास्ता अच्छा नहीं, कई नदी नाले बीच में आते हैं।

उसने अपने भय को प्रकट किया तो गुल हंस पड़ा। उसने बताया कि सब तो उसी रास्ते आते जाते हैं और फिर उसकी दुआयें उसके साथ रहेंगी। लेकिन नीलम अपने को बहला न सकी। विरह की चिन्ता ने उसे निढाल कर दिया।

कुछ देर दोनों बैठे रहे। नीलम रो-धोकर अब चुप हो गई थी। गुल ने समझा-बुझाकर चुप करा दिया था। उसने बताया कि शहर जाने से काफ़ी लाभ की आशा है। जब वह शान्त हुई तो गुल ने पूछा

—बताओ तुम्हारे लिये शहर से क्या लाऊं

—मुझे कुछ नहीं चाहिये। वह तुनक कर बोली।

—गुल ने प्यार से कहा—नाराज़ हो गई हो ?

—नहीं गुल ! वह सिसककर बोली—तुमसे नाराज़ कौन हो सकता है !

गुल ने हाथ में हाथ लेकर पूछा—बताओ, फिर क्या लाऊं ?

वह उसके सीने पर सिर रख मद्धिम स्वर में बोली

—मुझे दुनिया में तुम्हारे सिवा और कुछ नहीं चाहिये।

—अगर नहीं बताओगो तो मैं नाराज़ हो जाऊंगा गुल ने बनावटी गुस्से से कहा। नीलम उससे लिपट गई हंसकर कहा—बुन्दे ।

—बस ! वह भी मुस्करा पड़ा।

—अच्छा मैं अपनी पसन्द की चीज लाऊंगा।

कुछ बैठने के बाद उठी और बिदा होकर घर चल दी। गुल कल सुबह जा.

रहा था। नीलम ने वादा किया था वह उसे विदा करने अवश्य आयेगी ।

दूसरे दिन गुल शहर जाने के लिये निकला तो उसका दिल पसीज गया। रात को नीलम इतना रोई थी कि उसका दिल हिल गया था। उसका प्रभाव अब तक सुरक्षित था। गांव से शहर बस जाती थी। पहली बस सुबह की पहली किरण फूटने के साथ चल देती थी।

गुल गांव से निकल कर बड़ी सड़क पर आया। नीलम पहले से वहां उपस्थित थी। गुल ने उसे दूर से देख लिया था। पास आकर हैरानी से पूछा—तुम कब से खड़ी हो ?

—अज़ान के वक्त से। सिर झुका कर धीरे से बोली।

—इतने सवेरे क्यों आ गईं।

—नींद नहीं आ रही थी। इतने भोलेपन का उत्तर था कि गुल हैरान हो हो गया।

गुल ने गठरी एक ओर रखी, नीलम का कन्धा पकड़ा और सीने से लगा कर बोला—मैं जल्दी आ जाऊंगा।

गुल ने देखा। सचमुच नीलम की आंखें भारी-भारी थीं। जान पड़ता था वह रात भर सोई नहीं। कहने लगी—मेरी आंखें तुम्हारी राह देखती रहेंगी

—बस तुम मेरे लिये दुआ करती रहना। गुल ने प्यार से कहा

—खुदा तुम्हें हर बला से बचाए। नीलम के हृदय की आवाज़ थी। गुल का संसार खिल उठा। उसने पूरी ताकत से उसे कलेजे से भींच लिया।

कुछ देर बाद दूर से बस आती दिखाई दी। दोनों अलग-अलग हटकर खड़े हो गये। धुआं उड़ाती, पों-पों हार्न बजाती बस चली आ रही थी। पेड़ों के झुरमुट में रूक गई। गुल ने नीलम की ओर देखा, हाथ हिलाया और बस की ओर जाने लगा। वह यत्न करने पर भी आंसुओं को रोक न सकी। गुल बस में बैठ गया गठरी पांव में रख कर खिड़की से झांका। नीलम खड़ी थी।

थी ।

कुछ देर पों-पों बजा कर बस चली । नीलम ने सीने पर हाथ रख लिया । हृदय बस में नहीं था । आंसू अपने आप निकल रहे थे । बस जब पास से गुज़री तो उसने देखा, गुल भी रोआंसा सा बैठा था । उस पर इसका और असर हुआ वह सिसकियां ले लेकर रोने लगी ।

धीरे-धीरे बस के पीछे उड़ती धूल भी ग़ायब हो गई । धूप की तिरछी किरणें छन-छन कर ज़मीन पर पड़ने लगी थीं । रात भर आराम करने के बाद किसान घरों से निकल कर खेतों को जा चुके थे । वह धीरे-धीरे चलती घर की ओर जाने लगी ।

शाह भी खेतों पर जा चुका था । नीलम ने बुझे दिल से घर में प्रवेश किया, उसे हर वस्तु उदास मालूम हुई । वही घर था जहां वह वर्षों से रह रही थी । उसी घर में उसका बचपन बीता, जवानी आई । हर चीज़ उसकी देखी भाली थी । लेकिन आज उसे अनुभव हो रहा था मानो हर चीज़ उदास है, दीवारें उदास हैं । घर मे ऐसी शांती है मानो कोई रहता ही नहीं । उसे लगा जैसे उसकी अमूल्य वस्तु कहीं खो गई है ।

दोपहर हो गई । उसकी उदासी में अन्तर न पड़ा । वह बढ़ती ही गई । बात केवल इतनी सी थी कि आज तक वह विरह के ताप से परिचित नहीं थी । उसके लिए यह पहला अवसर था । वह अपनी बेचैनी जितना दबाने का प्रयत्न करती उतनी ही वह बढ़ती जाती, उमड़ती जाती । भोलेभाले मन पर विरह की मार !!

वह जानती थी गुल वापस आयेगा लेकिन यह सोच उदासी छा जाती कि अब रात को भेंट न हो सकेगी । यद्यपि गुल के रहते हुए वह चार-चार पांच-पांच दिन तक उससे मिलने न गई थी ।

मानव प्रकृति के अनुसार पास रहने वाली वस्तु से लाभ उठाने के लिये

हर मनुष्य तत्पर रहता है। जब गुल यहां था, तो उसका जी जब चाहता मिल आती लेकिन अब उसके न होने पर केवल उसकी याद से कैसे सन्तोष करती ! वह उसी तरह शोकातुर बैठी थी। बानो आ गई। उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर घबरा उठी। विस्मय से पूछा—क्या हुआ नीलम ?

उसने बानो की ओर देखा। कुछ उत्तर न दिया। सिर झुका लिया। बानो सोच में पड़ गई। सामने बैठते हुए साहनुभूति दिखाई कुछ बताओ तो नीलम हुआ क्या ?

—बानो ! वह हिचकी लेकर बोली—गुल शहर चला गया है

—शहर चला गया है। बानो ने उदास होते हुये पूछा।

—अब गांव वापस नहीं आएगा ?

नीलम भड़क उठी—तेरे मुँह में खाक

बानो कुछ समझी नहीं। हैरान हो गई—कब वापस आने के लिये कह गया है ? कुछ बताओ तो

—चार रोज बाद। नीलम मुँह बना कर बोली।

इतना सुनना था कि बानो खिलखिला कर हंस दी। नीलम हैरान हो देखती रही और बानो हंसती चली गई। जब वह बहुत देर तक हंसती रही तो उसे गुस्सा आ गया, ठुनक कर कहने लगी

—गधी, तुझे हंसी आ रही है ?

—और क्या तुम्हारी तरह आंसू बहाऊं। बानो हंसी रोक कर कहने लगी। चार दिन की जुदाई ने यह हाल बना रखा है

नीलम का पारा और चढ़ा—तुझे किसी से प्यार होगा तब पूछूंगी ?

और तेज़ क़दमों से चलती हुई कमरे में जाने लगी। बानो ने दौड़कर पकड़ लिया, लगी मिनतें करने। कसमें खा-खाकर उसे यक़ीन दिलाया, अब नहीं हंसेगी और बड़ी कठिनाई से उसे राजी किया। बानो ने नीलम के दिल

को काफ़ी सहारा दिया। दोनों बैठ कर बातें करने लगीं तो कुछ देर के लिये वह अपना ग़म भूल गई।

बानो ने झरने पर चलने को कहा तो वह तैयार हो गई। मुँह पर पानी के छींटें मार कुरते के पल्ले से मुँह साफ किया। झरने की ओर चली गई।

झरने पर बहुत सी लड़कियां थीं। कुछ झूला झूल रही थीं, कुछ कपड़े धो रही थीं, कुछ नर्म-नर्म घास पर पहाड़ी गीत गा रही थीं। यह दोनों भी उन्ही में मिल गई।

सहपहर के क़रीब नीलम वापस घर आई। शाम का खाना बनाने में लग गई। खीर और हलवे का ख्याल आया। उसके साथ ही गुल याद आया। कितने प्यार से उसके लिये खीर बनाया करती थी। वह फिर रोने लगी।

घर में अकेली थी, चुप कौन कराता? घुटनों में सिर दबाए आंसू बहाती रही। चूल्हा गर्म होकर फिर ठण्डा हो गया। लकड़ियां जल कर राख हो गई। शाम होने को आई, फिर जल्दी २ आग जलाई, रोटियां सेकने लगी। अब्बा के आने का समय हो चला था। खाना तैयार न पाकर अब्बा गर्म हो जायेगा।

रात हो चुकी थी। नीलम खाट पर लेटी जाग रही थी। शाह को सोए काफी देर हो चुकी थी। आज उसका गुल से मिलने को बहुत जी चाह रहा था लेकिन गुल तो शहर में था—न जाने इस वक्त वह क्या कर रहा होगा ?

दिल से उसके दुआ निकली—खुदा उसे अच्छी प्रकार रखे। उसकी दुनियां ही गुल है। उसने अपने हृदय में संकल्प किया। अगर चार दिन के अन्दर २ वह वापस हो गया तो दूला पीर के मजार पर घी के चिराग़ जलायेगी।

निगाहें आसमान की ओर थी। गहरे नीले आकाश पर सफ़ेद-सफ़ेद तारे उसके दिल के ही समान धड़क रहे थे। ऐसा मालूम हो रहा था मानो किसी भय से कांप रहे हों।

अंधियारी रात थी। नीलम ने इधर-उधर देखा। सारे घर पर शान्ति छाई थी अब्बा के खर्राटों के अलावा और कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। पूरा गांव निद्रा की गोद में था। चारों ओर शान्ति का ही राज्य था।

उसने करवट बदली। सोने का यत्न किया मगर नींद ! वह तो कोसों दूर थी। आज नींद आएगी ही नहीं। आंखें बन्द करती, खोलती लेकिन निद्रा देवी ! वह तो रूठ गई थीं।

चुपके से उठी, घड़े से पानी पिया। कभी इस करवट, कभी उस करवट, कभी औंधी, कभी चित, लेकिन आज तो नींद ने न आने की क़सम खाई थी। सवेरा हो चला था।

सुबह की सफेदी के डर से अंधेरा तड़पने लगा था। सुबह की आमद से पहले ही भागने की तैयारी करने लगा तो नीलम को नींद का आभास हुआ, पलकें भारी मालूम होने लगीं और वह निद्रा की गोद में चली गई।

कुछ ही देर में उसने देखा—वह गुल के कुंज की ओर जा रही है। उसे हैरानी थी, गुल तो शहर गया था, वह क्यों बाग़ में जा रही है। इसी हैरानी और परेशानी की हालत में पगडंडी पर धीरे-धीरे जा रही थी।

बाढ़ के पास गई तो गुल खड़ा दिखाई दिया। वह भागने लगी। पास पहुंच कर पहला सवाल था—शहर से कब वापस आये गुल ?

—अभी आया हूं। गुल ने मुस्करा कर उत्तर दिया। हाथ आगे बढ़ाये। नीलम आगे बढ़ी और उसकी बांहों के बीच चली गई। कहने लगी

—बात मेरी समझ में नहीं आई।

—कैसी बात ? गुल ने पूछा।

नीलम ध्यान से देखते हुए बोली—तुम तो चार रोज़ बाद आने का वायदा कर गये थे।

—हां, बस जल्दी आगया। गुल हंसा।

नीलम ने फिर उसे देखा। ऐसा जान पड़ा जैसे गुल न हो, कोई और हो। उसकी हंसी अजीब लगी। बड़े-बड़े दांत! वह चीख कर बोली

—मेरा ख्याल है तुम गुल नहीं हो

—नहीं, नहीं, मैं गुल ही हूं

वह आगे बढ़ा। नीलम पीछे हटती चली गई। बाढ़ से काफी दूर निकल गई। निगाहें उसी पर जमी हुई थीं। वह ठठा कर हंसा।

—तुम मुझसे भाग क्यों रही हो ?

—कौन हो तुम ? उसने घबरा कर पूछा।

—गुल ! कह कर वह आगे बढ़ा। नीलम ने देखा दैत्य जैसा आदमी ! उसके

हाथ बहुत लम्बे हैं। दांत बाहर निकल आये हैं। वह चीख पड़ी—तुमने मुझे यहां क्यों बुलाया है ?

—मैंने कहां बुलाया है। वह फिर हंसा—तुम खुद चलकर आई हो और दूसरे ही क्षण उसने नीलम को अपने भुजाओं में भर लिया। वह तड़पी मगर ऐसा जान पड़ा जैसे उसने उसकी गर्दन दबोच ली है। उसने अपनी पूरी ताक़त से चीख मारी और आंख खुल गई। चीख़ सुनकर शाह की भी आंख खुली। वह घबरा कर चारपाई से उठा। पास आकर बोला—क्या हुआ बेटी ?

—गुल...गुल। वह हकला कर बोली।

शाह ने प्यार से पूछा—क्या हुआ गुल को ?

अब उसके होश ठिकाने आगये, कहने लगी—मैंने एक डरावना सपना देखा है।

—पगली ! शाह हंस कर बोला—कहीं सपने भी कभी सच्चे हुए हैं ?

—नहीं अब्बा, नहीं। वह सीने पर हाथ रखे उठ बैठी। कहा

—गुल शहर में किसी मुसीबत में फंस गया है

—तुम्हारा वहम है बेटी। शाह उसे तसल्ली देने लगा।

नीलम का दिल डर गया था, आंखों में आंसू छलक आये। रूँधी आवाज़ में बोली—मेरा दिल डर रहा है

शाह प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेर कर कहने लगा—सपने का डर है न !

—अब्बा ! वह सहमी-सहमी बोली।

—मैंने कभी ऐसा सपना नहीं देखा

शाह ने उसके कंधों पर हाथ रखा। नीलम का शरीर थर-थर कांप रहा था। वह घबरा गया। एक गिलास पानी जबरदस्ती पिलाया। ठंडा पानी हलक़ से उतरा तो वह खुद को संभालने लगी। शाह उसे दिलासा देने लगा।

नीलम सोच रही थी—खुदा खैर करे, वह शहर गया है, किसी मुसीबत में न फस गया हो। वह हैरान इस बात से थी कि ऐसा स्वप्न उसे आया क्यों ? बार-बार दिल में एक ही डर सिर उठा रहा था—गुल पर कोई आफ़त न आई हो। सपना तो था उसे छलने का, उससे गुल की मुसीबत का क्या वास्ता ! यह बात कुछ मन में बैठी, तो उसे कुछ हिम्मत बंधी, कुछ तसल्ली हुई कि उसका प्रीतम कुशल से है।

तीन दिन और तीन रातें बीत गई। गुल न आया। नीलम कभी डरती और कभी सोचती—चार दिन का वायदा करके गया है, अभी पूरा एक दिन बाकी है। तीन दिन और तीन रातें बीते, चौथा दिन निकला।

जैसेही शाह बाबा घर से खेतों पर गया, नीलम सीधी गांव से निकल कर बड़ी सड़क पर आ गई। पेड़ों के झुंड तले बैठ गई। नजरें सड़क पर जमी हुई थी। जरा धूल दिखाई देती तो वह खड़ी हो जाती।

बैठे-बैठे दोपहर हो गई, गुल न आया। धीरे-धीरे भय सिर उठाने लगा। वह कभी उठती कभी बैठ जाती। दोपहर ढल रही थी। उसने सड़क पर धूल उड़ते देखी। खड़ी हो गई। बस पों-पों करती चली आ रही थी।

उसका दिल बल्लियों उछलने लगा। भागकर चट्टान से नीचे उतरी, सड़क के किनारे खड़ी होगई। बस धीरे-धीरे पास आ रही है। उसे यकीन था गुल इसी बस में होगा।

बस रुकी, नीलम भागकर बस के पास गई। एक बूढ़ा-सा मुसाफिर उतरा।

उसने बस के चारों ओर घूमकर देखा, गुल दिखाई न दिया। फिर एक चक्कर लगाया। गुल नहीं था।

वह वहीं जम-सी गई। बस पों-पों करती आगे बढ़ी और निकल गई। नीलम वहीं खड़ी रह गई। उसका दिल सचमुच कांपने लगा था—ईश्वर गुल को कुशलपूर्वक रखें। प्यार की प्यास तीव्र हो चुकी थी। आन्तरिक प्रेम ने उसे पागल-सा बना दिया था। तरह-तरह के विचार हृदय में स्थान ले रहे थे। प्रेम में विकल हो रही थी। भिन्न-भिन्न आशंकाएं हृदय में जन्म ले रही थीं। उसके विगत प्रेम को कौन समझाता, कौन बताता कि वह धीरज रखे।

बस धूल में डूब गई तो नीलम का दिल भी डूबने लगा। चुपचाप चट्टान पर आकर बैठ गई। निगाह शहर जाने वाली सड़क पर थी। मन गुल के पास था। हृदय ने चुटकी ली तो आंखों से आंसू निकल आये।

बानो उसे खोजती उधर आ निकली। दूर से ही देखकर आवाज़ दी—नीलम, ओ नीलम!

सिर उठाया, बानो को पहचान गई, फिर सड़क की ओर देखने लगी। दूर टेढ़ी-तिरछी सड़क घूमती-फिरती चली गई थी, जिसके दोनों ओर खेत ही खेत थे—हरे-भरे खेत, कुछ जाफ़रान के, कुछ गेहूं के, जिनके बीच होती हुई सड़क, निगाहों की सीमा से परे चली गई थी।

बानो दो-चार आवाज़ें देकर थक गई। भागती हुई पास आई।

—अरी यहां क्या कर रही है?

—गुल का इन्तज़ार कर रही हूं। वह सिर झुकाए बोली।

बानो ने उसे बाहों से पकड़कर उठाते हुए कहा—आ जायेगा, उसे भी गांव का रास्ता आता है।

—नहीं बानो! उसने बाज़ू छुड़ाते हुए कहा।

बानो चकित हो गई—अरे कोई बच्चा तो नहीं वह?

—बानो, तुम्हें नहीं मालूम । नीलम सिसक पड़ी ।

—आज उसने आने का वायदा किया था ।

—आज उसे कोई काम पड़ गया होगा । बानो ने समझाते हुए कहा—तुम तो यूँही चिन्ता कर रही हो ।

—बानो ! उसकी आंखों से आंसू टपक पड़े—खुदा करे वह कुशलपूर्वक हो ।

—नीलम ! बानो सहानुभूति की अथाह भावनाओं से बोली—गुल के उन्माद ने तुझे पागल कर दिया है

—हां बानो ! उसने एक आह भरी—सचमुच मैं पागल हो गई हूं, बानो ने उसका बाजू पकड़, प्यार से कहा—चलो घर चलें ।

—नहीं बानो ! मैं नहीं जाऊंगी । नीलम ने ज़िद की । बानो उसके साथ बैठते हुए बोली—तू नहीं जाती तो मैं भी नहीं जाऊंगी

दोनों साथ-साथ बै` शहर जाने वाली सड़क देखती रहीं । जब जरा धूल उड़ती दिखाई देती, नीलम उठकर देखने लगती और जब कुछ नज़र न आता तो फिर बैठ जाती ।

बैठे-बैठे शाम होने को आई । बानो कहते-कहते थक गई । नीलम ने एक न मानी । जब दिन डूबने लगा तो बानो ने फिर उसे घर चलने को कहा । नीलम रो पड़ी ।

बानो ने बताया अब तो शहर से कोई मोटरलारी भी न आएगी । अब यहां कब तक बैठी रहेगी । बाबा को मालूम होगा तो गुस्सा करेंगे ।

एक तो अब्बा का डर, दूसरे बानो की जिद, तीसरे अब बस आने का समय नहीं रहा । यही सोच मन को मार वह उठी । दोनों घर की ओर चले । बानो उसे दिलासा देती रही—कारोबार से गया है, काम ज़्यादा होगा, इसलिये रुक गया होगा ।

वह बानो की बात अनसुनी करके अपने अल्ला मियां से दुआएं मांग रही

थी। उसे डर होने लगा था—कहीं वह बीमार न हो, कहीं कुछ हो न गया हो। उसे कुछ खबर नहीं थी, गुल किस हाल में है। एक पागल प्रेमी के दिल की भावनायें, विरह की ज्वाला कौन जाने !

घर आई बेदिली से चूल्हा जलाया। बाबा के लिये खाना बनाने लगी। बानो अपने घर चली गई थी उसे भी अपने घर का काम-काज करना था। शाम हो चुकी थी। रात हो गई, नीलम के दिल की बेकली को कल न मिला। वह क्षण प्रति क्षण यही सोचती रही कि गुल को अवश्य कुछ हो गया है। वह किसी तकलीफ में पड़ गया है, नहीं तो अपने वचन पर अवश्य आ जाता।

सुबह हुई। डरते-डरते अपने दिल की बात उसने अब्बा से कह दी। शाह ने सुना तो बड़े ज़ोर से हंस पड़ा। नीलम को बाप की हंसी अजीब लगी।

—तू सचमुच पागल हो गई है

—नहीं अब्बा ! वह बौखला गई।

—अरी पगली, उसकी फ़सल अच्छी हुई है। रक़म वसूल कर रहा होगा। तुम किस फिक्र में हो ?

अब्बा की बात ने उसे ढारस बंधाया। फिर भी वह अपने विचारों के उमड़ते हुए तूफान को कम करने में सफल न हुई। शाह के घर से निकलते ही फिर शहर जाने वाली सड़क के किनारे जा बैठी। निगाहें कल की तरह सड़क पर थीं, कान मोटर की भों-भों सुनने को बेचैन। दिल में गुल की मूर्ति बसाये बैठी रही।

तिरछा सूरज धीरे-धीरे सीधा होने लगा। धूप काफी बढ़ गई। दोपहर हुआ चाहती थी। नीलम मोटर की पों-पों सुनकर चौंकी। बिजली की-सी तेजी उठी।

आशा-निराशा की मिली-जुली भावनाओं का भार लिये वह चट्टान से उतरकर सड़क के बिलकुल पास-पास आई। बस धीरे-धीरे पास आ रही थी। कुछ दूर ही से गुल का खिड़की से निकला सिर दिखाई दिया। वह चिल्ला उठी—गुल...गुल !

और जैसे ही बस खड़ी हुई वह दरवाजे को पकड़कर खड़ी हो गई। गुल नीचे उतरा भी नहीं था कि उसने पूछा

—कल क्यों नहीं आये ?

गुल हंसकर चुप रहा। नीलम ने दोबारा पूछा

—बताओ न, कल क्यों नहीं आये ?

—व्यापारी ने रोक लिया था। गुल ने नीचे उतरते हुए कहा।

नीलम मुँह बनाकर कहने लगी—कल भी सारा दिन यहां बैठी रही।

—चलो, चलो घर चलें। गुल सामान उठाते हुए बोला। नीलम उछलती-कूदती उसके साथ-साथ चलने लगी। वह जब गया था तो केवल एक गठरी थी अब तीन गठरियां थीं।

—इनमें क्या है ?

—तुम्हारे लिये बहुत-सी चीजें लाया हूं। गुल ने प्यार से कहा।

नीलम ने गम्भीरता से कहा—तुम कल नहीं आये, मैं तो डर गई थी ।

—पागल कहीं की । गुल हंसा ।

वह भोले स्वर में बोली—बाबा भी मुझे पागल कह रहे थे । क्या सचमुच मैं पागल हूं ?

—हूं । गुल ने कहा । फिर दोनों खिलखिला पड़े ।

वह बड़ी उमंग से उसके साथ-साथ जा रही थी । उसका गुल आ गया था । चार दिन उसने जिस बेचैनी में बिताये थे यह उसका दिल ही जानता था । अब उसे खुशी मिली जो उसके अंग-अंग से फूट रही थी ।

घर पहुंचकर गुल ने गठरियां खोलीं, सोने के बुन्दे, चांदी के नेकलेस, रंग-बिरंगी चूड़ियां, कपड़े और लहरियादार ओढ़नी । उसने तो सिर पर डाल बच्चों की भांति नाचना शुरू कर दिया जैसे उसने कुबेर का धन पा लिया हो ।

गुल का चेहरा खुशी से फूल उठा । उसकी लाई हुई चीज़ों से नीलम इतनी खुश होगी इसका उसे गुमान भी नहीं था । उसे इतना खुश रखकर वह अपनी खुशी पर क़ाबू न पा सका । उसके साथ वह स्वयं भी पागलों की तरह क़हक़हे लगाने लगा ।

नीलम ने सब चीजें उठाईं और सीधी अब्बा के पास खेतों पर पहुँच कर सब कुछ सामने रख दिया । शाह भी हैरान रह गया । बेटी को इतना प्रसन्न आज तक उसने नहीं देखा था । कहने लगा

—बेटी तुम बहुत खुश हो ?

—हां अब्बा । वह चहक पड़ी—बहुत खुश !

शाह ने एक क्षण सोचा । बेटी की इतनी प्रसन्नता देख वह भी फूला न समाया । प्यार भरे स्वर में बोला

—गुल कैसा लड़का है ?

नीलम लजा गई । धीमी आवाज़ से बोली—बड़ा अच्छा है

—तुम्हें कैसे मालूम ! शाह ने पूछा।

वह जल्दी से कहने लगी—सारा गांव उसे अच्छा कहता है

—अच्छा ! शाह मुंह फुला कर कहने लगा

—फिर तो तुम्हारी शादी उससे करूंगा।

—अब्बा !

नीलम सब सामान समेट उलटे पांव भाग खड़ी हुई। शाह खिलखिला कर हंस दिया। बीवी की मौत के बाद घर में अजीब उदासी-सी छा गई थी। यद्यपि बाप-बेटी अपने जीवन से संतुष्ट थे लेकिन शाह घर में क़हक़हों की आवाज़ सुनना चाहता था।

वह क़हक़हे उसकी बीवी की ज़िन्दगी में उस घर में जन्म लिया करते थे। जब उसकी बीवी अल्लाह को प्यारी हुई उस समय नीलम बच्ची थी। वह बाप के ग़म को न देख सकी, न अनुभव कर सकी थी। अकेला शाह अपने आप में जल रहा था।

अब वह अपनी बेटी के जीवन में ख़ुशी, आखों में प्रचलित लज्जा देखकर दिल ही दिल में खुश था। गुल गांव भर के लड़कों में सबसे अच्छा, बहादुर, खूबसूरत, एक बड़े से कुँज का मालिक था। किसी लड़की के बाप को लड़के में जिन-जिन गुणों की तलाश होती है वह गुल में मौजूद थे।

क्या रुकावट थी ? शाह ने दिल ही दिल में फ़ैसला कर लिया, वह इस जोड़े का बड़ी धूम-धाम से व्याह रचाएगा। गुल का इस दुनिया में कोई नहीं था। पहले बाप मरा और फिर मां, अब वह इस दुनियां में अकेला था। शाह

दिल में सोचता—उसकी बेटी राज करेगी और फिर गुल—गुल तो उसे जी जान से चाहता है। न सास का झगड़ा, न ननद की बातों का सोच, रानी बनकर घर में रहेगी! ऐसा समय आने से पूर्व ही इस खुशी में शाह मजा लेने लगा।

नीलम बाप के खेतों से वापस आई। घर में आकर आईने के सामने बैठ गई। सोने के बुन्दे निकाल कर हाथ पर रखे। जगमग-जगमग कर रहे थे। छोटे-छोटे लाल-लाल नगीने बड़े अच्छे लग रहे थे। बे-अखतियार होकर बुन्दे सीने से लगा लिये। फिर जल्दी से कानों में पहन कर देखा, अच्छे लग रहे थे। वह उछल कर खड़ी हो गई। जी चाहता था खूब नाचे। अंग-अंग थिरक उठे, रोआं-रोआं नाच उठा। उसने सोने के बुन्दे देखे अवश्य थे लेकिन आजतक अपने कानों में पहने नहीं थे। गुल तो पहले ही से उसके हृदय पर अधिकार जमा चुका था। सोने के बुन्दों ने तो उसे पागल बना दिया।

कुछ क्षणों बाद वह उदास हो गई। उन बुन्दों को देखने वाला कोई नहीं था। एक उसकी नज़रें थीं जो बार-बार बुन्दों को देख रही थीं। मानव-स्वभाव के अनुसार उसके हृदय में यह इच्छा पैदा हुई कि कोई इन बुन्दों को देखे, प्रशंसा करे और वह यह बताये कि यह बुन्दे गुल ने लाकर दिये हैं।

अचानक उसे विचार आया, वह झरने पर जाये, वहां बहुत सी लड़कियां होंगी, सब देख लेंगी। यह विचार आते ही वह द्वार बन्द कर झरनों की ओर भाग खड़ी हुई। झरने पर सचमुच बहुत सी लड़कियां थीं, बानो ने उसे देखा, पास आई, कहने लगी

—मुबारक हो नीलम

—कैसी मुबारक! नीलम जान बूझकर अनजानी बनी।

—तुम्हारा गुल शहर से वापस आ गया ना ?

—हां! वह हंस दी।

बानो की निगाह बुन्दों पर पड़ी तो उचककर पास आई, बुन्दों को हाथ

लगाते हुये पूछा—सोने के हैं ?

—हां खालिस सोने के। वह खशी से झूम उठी।

—गुल शहर से बनवा कर लाया है

बानो ने रश्क भरी नजरों से देखा। दूसरी लड़किया भी सोने के बुन्दे देखने पास आ गईं। किसी ने प्रशंसा की, तो कोई दिल ही दिल में जलकर रह गई और नीलम अपने हृदय में प्रसन्न थी कि लहेलियों ने उसके सोने के बुन्दे देख लिये थे।

फ़सल बड़ी अच्छी उतर रही थी, फलों काटोकरा बराबर शहर भेजा जा रहा जिसकी बड़ी अच्छी रकम वसूल हो रही थी। शाह को मालूम हुआ तो वह भी दिल ही दिल में बड़ा खुश हुआ कि उसका होने वाला दामाद मालदार बनता जा रहा है।

बात तो खुश होने वाली थी ही। कौन नहीं चाहता उसके पास दौलत आये ? गुल की दौलत नीलम की थी और नीलम उनकी बेटी थी। दो घराने एक हो रहे थे और दोनों घरानों की दौलत भी एक जगह जमा होने वाली थी।

इस घराने का सबसे बड़ा आदमी शाह था। उसे अपनी बुजुर्गी का मान था। यही कारण था वह उसकी दौलत से खुश था। कम से कम गांव भर में इज़्ज़त तो होगी। फिर वह नम्बरदार के मुक़ाबले में आ जायगा।

कोई रुकावट न थी, कोई कठिनाई नहीं थी। प्रेम का देवता दो दिलों की धड़कनों को समेटता हुआ आगे और आगे बढ़ता जा रहा था। मंज़िल क़रीब थी, बहुत ही करीब। लेकिन—ज़माने की चाल—न पहले एक थी, न अब है और न आगे एक रहेगी। परिवर्तन तो होते ही रहते हैं।

काले कोसों दूर बैठे नूर का एक रोज़ गुल के नाम पत्र आया—

अच्छे गुल,

मुहब्बत भरा सलाम !

कारोबार में बड़ा घाटा हो गया। इज़्ज़त-आबरू बचाने के लिये दस हज़ार रुपयों की फ़ौरन ज़रूरत है। मैं इसके लिये अपने आपको बेचने को तैयार हूं। लेकिन मेरे बिक जाने से भी बात नहीं बनती। बहुत सोचा, बहुत हाथ-पांव मारे, लेकिन कहीं से सहारा नहीं मिला। तुम्हारा नूर बड़ी मुसीबतों में फंस गया है। अगर चाहो तो इस वक्त अपने दोस्त पर ज़िन्दगी भर के लिये एहसान कर सकते हो। जो कुछ भी हो, फ़ौरन हो। मैं बड़ी बेताबी से इन्तज़ार कर रहा हूं।

तुम्हारा दोस्त

नूर

नीलम के बाद अगर भरी दुनियां में गुल के लिये कोई था तो वह नूर था। समय की बेढंगी करवट ने आज दोस्त को बुरे हालात से दो-चार कर दिया था। गुल बड़ा चिन्तित हुआ। नूर उसका बड़ा गहरा मित्र था। वह नूर को अच्छी तरह जानता था।

नूर लाखों रुपयों का अकेला मालिक था। उसकी कोई सन्तान नहीं थी। लेकिन उसके लखपती होने पर भी दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। नूर धनी होने पर भी धन के गर्व को एक ओर छोड़ कर गुल से मित्रता के नाते मिलता-जुलता था। नूर के पास धनी-मानी व्यक्तियों वाला घमण्ड नहीं था। वह सदा ग़रीबों का हमदर्द था। सदा अपने से छोटों को भी सीने से लगाता।

और आज—नूर बुरे हालात से दो-चार था। गुल को यकीन था नूर ने बहुत विवश होकर उसकी मदद मांगी होगी, वरना वह बहुत खुददार आदमी है। अन्दर घुल-घुल कर मर जाये लेकिन किसी के सामने हाथ न फैलाए। नूर अवश्य किसी बड़ी घटना का शिकार हुआ है।

गुल को पहली बार दुख का अनुभव हुआ और हार्दिक दुख का अनुभव। मित्र का दुख अपना दुख होता है। वह उन मनुष्यों में से एक था जो दूसरे का दुख अपने हृदय में महसूस करते हैं और फिर नूर तो उसका अपना जिगरी दोस्त था। देखने-सुनने वालों के लिये दोस्ती का एक उदाहरण था।

बचपन से जवानी आ गई। समय बदलता रहा लेकिन उनकी मित्रता में कोई परिवर्तन नहीं आया था। पहले की तरह आज भी वैसी ही प्रीत थी, वही प्रेम था, आयु की बढ़ोतरी ने मित्रता में बढ़ोतरी ही की थी।

शाम हो गई। गुल बहुत परेशान था। क्या करे क्या न करे। दोस्त को मुसीबत में गिरफ़्तार देख कर वह बल खा रहा था। उसका बस चलता तो उड़ कर अब तक नूर के पास पहुँच भी गया होता, लेकिन वह उससे बहुत दूर बैठा था।

नीलम उसके पास आई। उतरा हुआ चेहरा देख घबरा गई।

—गुल क्या बात है, तुम उदास नजर आ रहे हो ?

—*कुछ नहीं नीलम ! वह बनावटी हंसी हंसा।*

लेकिन वह बच्ची नहीं जिसे बातों में बहलाया जा सके। विनय भाव से कहने लगी

—गुल मेरा दिल डर रहा है, सच-सच बताओ ना।

—कोई बात नहीं। गुल फिर मुस्कराया।

—लेकिन नीलम को तसल्ली न हुई। वह रुंधी आवाज़ में कहने लगी

झूठ न बोलो। तुम्हारा चेहरा बदला हुआ दिखाई देता है ज़रूर कोई बात है। मुझसे क्यों छुपाते हो···खुदा खैर करे—मैं पूछे बिना नहीं जाऊंगी

—नीलम ! गुल कुछ सोच कर बोला—मेरा एक दोस्त बहुत सख्त बीमार है। आज ही उसका खत आया है

—और तुम उससे मिलने जा रहे हो

—उसको मेरी मदद की ज़रूरत है

वह घबरा गई, शायद गुल फिर शहर जा रहा है। वह उसे नज़रों से ओझल नहीं करना चाहती थी। आंखों में आंसू आ गये। डूबी हुई आवाज़ में कहा—तुम जा रहे हो।

—नहीं नीलम, उसे मरी मदद की ज़रूरत है। गुल धीमे स्वर में बोला —मैं यहीं बैठा-बैठा उसकी मदद करूंगा

नीलम के दिल को सहारा मिला। वह जा कहीं नहीं रहा है। गुल ने जान-बूझ कर उसे सारी बात नहीं सुनाई थी। वह जानता था, नीलम को इस बात की बड़ी खुशी है कि उसके पास रक़म जमा हो गई है। और अगर वह जान गई कि नूर ने कुछ रक़म मंगाई है तो वह दुखी हो जायगी।

और फिर दोस्त की इज्ज़त का सवाल था, उसकी अपनी साख का सवास था। गांव भर में बात फैल जाती और शाह बाबा भी जान जाता जिसे वह कदापि बताना न चाहता था। बात ही कुछ ऐसी थी कि उसे छुपाने की आवश्यकता थी।

दूसरे दिन सुबह उठते ही गुल ने जमा पूंजी निकाली कुछ इधर-उधर से मांगकर दस हज़ार रुपया जमा किया और उसी दिन नूर को भेज दिया। मित्र को बुरे हाल में देखकर वह कैसे चुप रह सकता था, अपनी पूंजी और कुछ उधार लेकर नूर को नहीं, मित्रता की भेंट चढ़ा दिये।

जब वह रुपये भेज चुका तो उसे असीमित प्रसन्नता हुई। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो सिर से कोई बोझ उतर गया है। मानो उसने स्वर्ग जीत लिया है। उसने मित्र की मदद कर अपने आपको जीत लिया था। वह, उसका दिल, उसका मन, सब खुश थे।

यद्यपि उसने सारी पूंजी नूर को भेज दी थी और वह ऋणी भी हो गया था। रक़म न होने से उसका विवाह भी रुक सकता था, उसकी नीलभ भी उससे दूर जा सकती थी। लेकिन दोस्त की मदद से जो खुशी इस समय महसूस हो रही थी, वह इन सब खुशियो से कहीं अधिक थी।

नीलम मिली तो गुल उसे लिपट गया। अत्याधिक प्रसन्न देखकर वह चुप रह न सकी, पूछने लगी— क्या मिल गया हैं गुल ?

—बहुत कुछ मेरी जान ! वह झूमता हुआ बोला—इतना कुछ कि जिस का मैं भी अनुमान नहीं कर सकता था।

—मुझे भी बताओ न। वह प्यार से बोली।

—मैं...। मैंने...स्वर दबाते हुये बोला—अपने दोस्त की मदद अपनी ताक़त से भी ज्यादा की है।

—अच्छा ! बाहों के कसाव से वह कसमसाने लगी।

—तुम्हारा दोस्त भी खुश हुआ कि नहीं !

—ज़रूर हुआ होगा। मैं अपने दोस्त को अच्छी तरह जानता हूं—बहुत खुश हुआ होगा

वह गुल की खुश से खुष हो उठी। उसका रोआं खुशी से प्रभावित हो उठा। उसे और बातों से क्या वास्ता ? वह तो केवल इसलिये खुश थी कि उसका प्रीतम खुश था।

फ़सल समाप्त हो रही थी। गुल के पास कुछ नहीं बचा था। लेकिन वह संतुष्ट था कि उसने वही कुछ किया जो सच्चे मित्र सदा से करते आये

हैं। अपने आप को उसने आने वाले कल को सौंप दिया, जो होगा देखा जायेगा।

उसे भरोसा था, अगले साल फसल अच्छी होगी। वह जान-तोड़ मेहनत करेगा, खाद डालेगा। रात-रात भर बाग़ की रखवाली करेगा। मंडी में फलों की कीमत फिर चढ़ेगी, उसके पास फिर रुपया जमा हो जायेगा और जब तक रुपया जमा नहीं होता वह शादी की खुशी को दिल में दबाये दिन काटता रहेगा। शादी से ज्यादा खुशी उसने अपने अधिकार में रख छोड़ी थी।

अगले साल की आस पर उसे भरोसा हो चला था। नीलम उसी तरह मिलने आती। दोनों बैठ कर बातें करते, प्यार भरा वार्तालाप होता, कुछ छेड़-छाड़ होती मानसिक शान्ति मिलती और रात—चुपके से चली जाती।

गुल यूं तो उसके सामने हंसी-खुशी से रहता लेकिन एक कांटा था जो हृदय में धंसता जा रहा था। मन ही मन सोच रहा था कि उसके ब्याह का व्यय बनेगा। दोस्ती में अपना फर्ज अदा करके वह एक उलझन में फंस गया था।

डर था, कहीं शाह बाबा अचानक शादी की बात चीत न शुरु कर दें। सबको मालूम था, गुल की फसल अच्छी हुई है। वह खाता-पीता आदमी है। अब तो उसके पास काफ़ी रक़म जमा हो गयी होगी। अगर बात शुरु हो गई तो वह क्या उत्तर देगा ?

नीलम के दिल पर क्या बीतेगी ? उससे वह क्या कहेगा कहीं शाह बाबा नाराज न हो जाय। दोस्त के मदद की खुशी, अपनी चाहत का ग़म —गुल का मन उलझनों का अड्डा बन गया था।

आख़िर एक रोज़ नीलम ने पूछ ही लिया। वह कई दिनों से मन को मसोस रही थी। जब सहन न कर सकी तो कह उठी

—गुल आजकल क्या सोच रहे हो ?

—कुछ भी नहीं। एक सादा उत्तर था।

नीलम लजाते हुये कहने लगी—अब्बा से बातें करो ना!

—हूं! दिल पर ठेस लगी। धीरे से बोला।

—करूंगा

—कब? वह रोआंसी हो गई।

—कई दिनों से तुम यही कह रहे हो।

—नीलम! होठों पर चिन्तातुर मुसकान फैली।

मुझे तुम से ज्यादा फिक्र है।

—झूटे कहीं के! वह मचल गई—फिर उदास क्यों रहते हो?

गुल उसे क्या जबाब देता? कामनाओं की भरी दृष्टि उठी, नीलम का सिर झुका और गुल का अन्तःकरण रो पड़ा। दुःख ऐसा था जो बताया नहीं जा सकता था। सुख ऐसा था जो व्यक्त नहीं हो सकता था।

नीलम ने उसे यूं चुप-चुप देखा तो दिल पर हाथ रख लिया, घबराकर कहने लगी—*तुम्हें मुझ से प्रेम नहीं रहा गुल?*

गुल तड़प उठा।

—नहीं नीलम, खुदा की कसम यह बात नहीं। गुल से इस जिन्दगी में यह उम्मीद न रखो। तुम तो गुल की दुनियां हो, मुहब्बत हो, मेरा प्यार हो, मेरी जिन्दगी का सुख और शान्ति हो।

कहते-कहते उसने नीलम को सीने से लगा लिया। वह उसके सीने पर सिर रखे रो दी सिसकियां लेते हुए उससे लिपट गयी।

गुल ने अपनी जबान अपने होठों में दबा ली। उसके आंसू भी मचल रहे थे। उसने जोर से नीलम को दबोच लिया। जोश दूसरे रंग में उबल पड़ा लेकिन सिसकी दब न सकी। बेबसी से बेबस होकर गुल की आंखों से आंसू निकल पड़े। नीलम देख न सकी। गुल उसे दिखाना न चाहता था। आंसू पोंछने का प्रयत्न किया। दिल में एक हूक-सी उठी। सिसकी बढ़ी। हिचकी की आवाज से नीलम चौंकी—बिजली गिरी—

—गुल तुम—रो रहे हो! नीलम का दिल हिल गया।

गुल चुप रहा।

—क्या बात है? नीलम के दिल में कसक उठी।

—कोई बात नहीं नीली! गुल बुझी आवाज में बोला।

—सच बताओ गुल, क्या बात है? नीलम का हृदय कांप गया। वह क्या जवाब देता। हृदय में एक आग सुलग रही थी, अन्दर घाव था, बाहर कुछ नहीं।

क्या कहे, क्या न कहे। नीलम ने उसे चुप देखा तो हिचकियां लेती हुई बोल पड़ी—

—मेरा दिल डर रहा है, सच-सच बताओ गुल क्या बात है?

हुंह। वह जबरन मुस्कराया—कोई बात नहीं मेरी जान?

मर्द के आंसू—नीलम सहम कर बोली—किसी बड़े तूफान की तरफ इशारा करते हैं

गुल ने अपने आपको सम्भालने का प्रयत्न किया। वह जानता था नारी बड़े छोटे दिल की होती है। ऐसा न हो, नीलम कुछ सोच ले, डर जाय और सरसों बराबर गलती पहाड़ जैसा नुकसान कर दे। फीकी मुस्कराहट से कहने लगा—कोई बात नहीं है।

वह तड़प कर कहने लगी—तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों आये थे

—इस ख्याल से। गुल ने बात बनाई—अगर कहीं हमारी शादी न होस की तो क्या होगा !

—होगी क्यों नहीं गुल ! गुस्से में आ गई।

—और अगर न हुई तो मैं नदी में डूब मरूंगी

—नहीं, नहीं नीलम ! गुल ने उसके मुंह पर हाथ रखते हुए कहा।

—खुदा न करे ऐसा हो

अब नीलम ज़ोर से रो पड़ी। गुल उसे दिलासा देने लगा। उसकी हिचकी बंध गई।

—तुम मर्द होकर हिम्मत हार रहे हो ?

गुल के विचारों ने तुरन्त करवट ली। अपने आप को उसने संभाला और दूसरे ही क्षण ठठा कर हंस पड़ा।

—तुम सचमुच डर गईं

—गुल ! ·

नीलम की आवाज़ रुक गयी। हैरान निगाहों से उसे देखने लगी। गुल भरपूर हंसी हंस रहा था। वह सिटपिटा गई और तुरन्त ही समझ गई कि वह मज़ाक कर रहा था। कुछ क्षण सुन्न रहने के बाद होंठों ही होंठों में मुस्कराई। नजरें झुका कर बोली—

—तुमको सताने में मज़ा आता है

—तू बातें ही ऐसी करती है

गुल की मुस्कान फीकी थी। नीलम को उससे प्यार था और प्रेम अन्धा होता है और अन्धा अपने प्रेमी के चेहरे पर मुस्कानही देखना चाहती है। लेकिन वह इस मुस्कान की नींव न देख सकी।

कुछ देर बाद वह चली गई। जाते समय वह सन्तुष्ट थी। गुल के चेहरे

पर प्रसन्नता के चिह्न थे । लेकिन जैसे ही वह नयनों की ओट हुई वह पत्थर की मूर्ति के समान हो गया । चेहरे पर दुख की रेखायें बर्फ की तहों की तरह जमती चली गईं ।

दुख यह था कि वह अपने आप को शाह के मुकाबले में खड़ा नहीं कर सकता था । जब वह सोचता वह अयोग्य हो चुका है, अन्दर ही अन्दर खौल कर रह जाता ।

गुल के जीवन में कभी ऐसा अवसर नहीं आया था । इतने बड़े शोक का, इतने सोच का बोझ उस ने आज तक अपने कन्धों पर नहीं देखा था । हृदय में तूफान उथल-पुथल मचा रहे थे । वह तूफान अब इस तरह उबाल पर था जिसे सहने की शक्ति कदाचित उसमें नहीं थी । सीना फट रहा था ।

यह उसके गम का, उसके विचारों का हाल है । कहते हैं कहने से हल्का हो जाता है । लेकिन गुल के लिये तो यह भी सम्भव नहीं था । किससे कहे, किसको बताए, कौन सुने, कौन सुनाए । अगर कोई जान ले तो उसकी साख की जड़ खोखली पड़ जायेगी, शाह बाबा की इज्जत पर उंगली उठ सकेगी । नीलम तड़प-तड़प जायेगी ।

इस उठती हुई हूक को दबाये रखना । गुल का ही काम था । लेकिन वह कब तक उस दुख को छुपाये रखेगा । सोचता—कहीं बाहर चला जाय जहां उसको जानने वाला कोई न हो । अकेला बैठ कर खूब रोए, शायद इस तरह उसका दिल हल्का हो जाय । वह बोझ उतर जाय जिसके भार तले वह दबा चला जा रहा था और उसका भारीपन वही नीलम का प्रेम था ।

फिर नीलम की ओर मन पलटा। उसे छोड़ कर जाना उसके बस की बात नहीं। जाने वह क्या सोचे, क्या समझे। बेवफाई करना—उसकी हिम्मत से बाहर है लेकिन—यहां रह कर—क्या करना है?

यह विचार तो उसे और तड़पा देता। वह सिर को दोनों हाथों में थाम कर उस मिट्टी के चबूतरे पर औंधे मुंह लेट जाता। काफी देर तक करवटें लेता रहता। दुख और उसके साथ तड़प ने उसे पागल बना दिया था।

कुछ दिन बीते । कुछ गुल की हालत बदली । अब वह नीलम के सामने जाने से घबराता । वह अपने प्रेम से भयभीत था । वह उससे क्या कहे, उसकी बातों का क्या उत्तर दे, कब तक झूठ बोलता रहे ।

बहुत व्याकुल होता तो अपने कुंज के उसी चबूतरे पर लेट कर अकेले रोने लगता । लेकिन उसका अन्तःकरण संतुष्ट था, आत्मा में प्रकाश था । वह किसके काम आया था । उसने अपने एक मित्र के दुख में मदद की थी

यह ऐसी खुशी थी जो उसकी आंखों पर आप से आप अधिकार जमा लेती और फिर वह प्रसन्नचित्त हो जाता । अपने दुखदायी विचारों का पश्चात्ताप करता जैसे रोकर उसने कोई पाप किया हो ।

बात भी कुछ विचित्र थी । एक ओर मित्रता दूसरी ओर प्रेम—दोनों ओर बराबर की आग थी । मित्रता पर प्रेम का बलिदान करना चाहता था—और अब—आपने प्रेम की सिककियां देखकर तड़प रहा था । अपनी लगाई हुई आग से व्याकुल नहीं था लेकिन आग से स्वयं जल रहा था ।

इधर गुल अपने विचारों के ताने-बाने बुनने में लीन था उधर शाहजी ने तीन हरे-भरे जाफरान के खेतों का सौदा कर लिया । किसी का रुपयों के बिना काम अटका था और शाह अपनी खेती बढ़ाने की इच्छा की पूर्ति की ताक में थे ।

सौदा तय हुआ, पांच हज़ार ब्याना शाह ने दे दिया । बाकी दस हज़ार बाद में देने का वायदा कर लिया । उनके पास अपनी कुल नकद पांच हज़ार थी ।

उन्होंने सोचा—खेत तो शायद फिर न मिले, सौदा कर लें। दस हजार गुल से उधार लेंगे और धीरे-धीरे कर चुकता करके देंगे। इस तरह तीन खेत उनके हो जायेंगे, उनकी धाक गांव में और जम जायेगी।

सौदा करके शाहजी झूमते-झूमते गुल के पास आये, बड़े खुश थे। आते ही गुल को अपने सौदे का विवरण बताया। गुल भी खुश हो गया—उसके होने वाले ससुर के पास तीन जाफरान के खेत और हो गये। इन खेतों की बड़ी कीमत थी। शाह ने प्रसन्नता में डूबते हुए कहा।

—गुल मुझे दस हजार रुपयों की फौरन जरूरत है

—जी ! गुल सन्नाटे में आ गया।

शाह कहने लगा—तुम मुझे दस हजार रुपये उधार दे दो, मैं धीरे-धीरे करके तुम्हारा कर्ज चुका दूंगा।

—शाह बाबा ! गुल चीख पड़ा—मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं।

—हैं ! शाह अचम्भित हो बोला—क्या कह रहे हो।

—हां बाबा ! सच कह रहा हूं।

शाह की आंखें चढ़ गईं—तुम्हारे पास तो काफी रकम थी। गुल ने नूर के खत से लेकर रुपये भेजने तक की सारी कहानी सुना दी। शाह की भौंहें तन गईं।

—मुझे यकीन नहीं आता

—शाह बाबा ! वह रुंधी आवाज में कहने लगा—

अल्लाह पाक की कसम, सच कहता हूं।

—मैंने तुम्हारे भरोसे पर सौदा किया था। शाह भड़क कर बोला

—अगर रुपये अदा न हुए तो मुंह पर कालिख लग जायेगी, मैं बदनाम हो जाऊंगा, मेरे भरम का भंडा भी फूट जायेगा

गुल ने बहुत यत्न किया कि शाह को विश्वास हो जाए। लेकिन शाह को बार-बार अपनी इज्जत का ख्याल आ रहा था। उसने गुल के भरोसे पर सौदा कर लिया था। अब भुगतान की कोई राह दिखाई नहीं देती थी। अगर रुपया अदा न हुआ तो लोग क्या सोचेंगे।

शाह रोष में कमरे में टहलने लगा। गुल सहमा खड़ा था। आज उसका प्रेम और इज्जत दोनों खतरे में आ गए थे। शाह ने नाक चढ़ाकर कहा—अगर कर्ज़ देना नहीं चाहते तो साफ इन्कार कर दो।

बाबा! गुल सिसक कर बोला—आप मेरी बातों का विश्वास क्यों नहीं करते।

लेकिन उस समय शाह की मानसिक अवस्था का सन्तुलन कहां था! दिमाग़ पर भूत सवार था। उसे विश्वास न आया कि गुल अपने किसी दोस्त की जरूरत पर अपनी सारी पूंजी दे सकता है। एक दोस्त को भला गुल अपनी सारी पूंजी दे सकता है। शाह के विचारों में 'दोस्ती की यह भेंट' घर नहीं कर सकी।

गुल ने विश्वास दिलाना चाहा लेकिन शाह की आत्मा तो अंधेरे में घर कर चुकी थी। शाह भड़ककर घर से बाहर निकल गया।

गुल हाय करके रह गया। एक चीज देकर दूसरी चीज़ उसके हाथ से निकली जा रही थी। दूसरे के जलते हुए घर में पानी डाला था अब उसका

अपना घर आग की लपेट में था। दोस्ती के बदले प्रेम डूब रहा था और वह मजबूर था।

यह सौदा महंगा अवश्य था लेकिन गुल के लिये सस्ता था। उसका प्रेम अगर असफलता से कष्टमय था तो मित्रता की भावना को जागृत रखने से उसके हृदय को सुख व शान्ति मिली थी। उसने मित्रता के इतिहास में एक अनोखी पंक्ति जोड़ी थी।

शाह को गुल से नफ़रत हो गई। उसकी सोची हुई बात अधूरी रह जाए, यह उसकी इज्जत का सवाल था। इसे उस जैसा आदमी सहन नहीं कर सकता था। उसे गुल से निराश होने की आशा नहीं थी। इस विचार ने कि गुल उसे रुपये नहीं देगा, उसे पागल बना दिया था। गुस्से से भरा हुआ वह घर पहुंचा।

नीलम ने बाप को गुस्से में देखा तो डर गई। शाह कई बार गुस्से मे आया था लेकिन यह हालत उसने कभी नहीं देखी थी। उसका बाप गुस्से से कांप रहा था। नीलम ने डरते-डरते पूछा—

—क्या बात है अब्बा?

—वह गुल है ना गुल...शाह ने दांत किटकिटाए।

नीलम थर्रा उठी। कांपती आवाज में कहा—हां।

शाह ने फिर दांत पीसते हुए कहा—उसके पास काफी रकम है लेकिन कर्ज देने से इन्कार कर रहा है। मैंने खेतों का सौदा करके पांच हजार रुपया भी ब्याना दे दिया है।

नीलम बैठी-बैठी सहम गई। बाप के मुंह से गुल की शिकायत—वह भी इतने गुस्से में—इतनी घृणा से—अल्लाह खैर करे। मुँह से स्वत; निकल गया।

शाह ने गुल की शिकायत की है। उसे और किसी बात की चिन्ता नहीं थी, वह परिणाम से, भयभीत थी जो सामने मुंह बाये उसके प्रेम को ग्रास बनाने के लिए खड़ा था—शाह और गुल की नाराजगी उसका जीवन तबाह

कर सकती थी । वह बुत बनी बैठी थी । शाह गरजा—देखा तुमने बेटी ! मुसीबत आ पड़ी तो इन्कार कर दिया ।

वह क्या उत्तर देती । उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि गुल रकम होते हुए भी इन्कार कर दे । उसे आशा ही नहीं थी बल्कि पूर्ण विश्वास था कि गुल उसके लिये अपनी जिन्दगी हार सकता है । रकम तो बहुत तुच्छ है ।

अब्बा को अवश्य धोखा हुआ है । उसने अपने दिल को तसल्ली दी । उसका गुल ऐसा नहीं कर सकता । गुल ऐसा नहीं हो सकता । वह अपनी नीलम के लिये रुपया क्या दुनिया की हर वस्तु दे सकता है । साहस करके बोली—अब्बा गुल ऐसा नहीं……

—मेरा भी पहले यही ख्याल था । शाह नफरत से बोला और उसी के भरोसे मैंने सौदा किया था ।

—आपको गलतफहमी हुई होगी । नीलम ने धीरे से कहा ।

—हूं—उसने कुछ और कहा होगा । शाह भड़क उठा—मैं कोई दूध-पीता बच्चा नहीं हूं । उसने तो साफ़ इन्कार कर दिया है, कहता है मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं—कहां दस हज़ार की बड़ी रकम का सवाल है ।

एक तरफ बाप दूसरी तरफ प्रीतम—नीलम का हृदय कोई निर्णय नहीं कर सका । किसे झूठा माने, किसे सच्चा माने । शाह ने खुले शब्दों में सब-कुछ बता दिया था । झूठ मानने का कारण उसकी समझ से परे था ।

गुल ने स्वयं कई बार कहा था अब उसके पास रकम जमा हो चुकी है । वह शहर भी गया था, वहां से भारी रकम लेकर आया था और अब बाप

की बात तो उसके बिलकुल विपरीत थी। वह चिन्तित और आतुर थी तथा आने वाली घटना से भयभीत हो रही थी।

उसी दिन अवसर पाकर वह घर से निकली। सीधी गुल के बाग़ में पहुंची। वह उसी चबूतरे पर सिर झुकाए बैठा था। वह जाते ही उसके निकट खड़ी हो गई। गुल ने उसे देखा तो प्रसन्नता से खिल उठा।

—तुम आ गई नीलम—मैं डर रहा था···

—किस बात से गुल! उसके गले में बाहें डालकर झूलती हुई वह बोली।

—डर था, शाह बाबा ने तुम्हें मुझे मिलने के लिये मना न कर दिया हो।

—किया तो नहीं गुल! वह उदास हो गई।

—लेकिन कर देंगे।

—नीलम! गुल की आखों में आंसू आ गये।

—क़िस्मत ने चक्कर में डाल दिया है।

—गुल—मेरे लिये बाबा को कर्ज दे दो। नीलम उससे लिपटी हुई कहने लगी—बाबा की इज्जत का सवाल है।

—नीलम क्या तुमने मुझे ग़लत समझा है। गुल उसके बालों से खेलने लगा। मैं अगर मजबूर न होता तो कभी इंकार न करता

—क्या मजबूरी है। नीलम ने रूठते हुए पूछा।

गुल ने सारी बात जिस तरह शाह को सुनाई थी, नीलम को सुना दी। वह क्षण भर के लिये ठिठक गई गुल ने उसे विश्वास दिलाया वह सच कह रहा है। दोस्त मुसीबत में था। वह रकम रखते हुए इन्कार न कर सका

यह बातें उसने कुछ ऐसे स्वर में कहीं कि नीलम उससे लिपटे-लिपटे रोने लगी। गुल की बातों पर उसे विश्वास हो गया था। वह पहले ही जानती थी कि गुल रकम रख कर इन्कार नही कर सकता। शाह बाबा के लिये न

नहीं वह अपनी नीलम के लिये इतनी-सी कुरबानी से कभी पीछे नहीं हटेगा।

वह उलटे पांव अब्बा के पास खेतों पर गई। जो बात गुल ने सुनाई, बाप को बता दी। शाह के लिये यह कहानी कोई नई नह थी व स्वयं यही सब कुछ उससे सुनकर आया था। उस बात पर उसे पहले से विश्वास था अब इसे नीलम ने भी प्रकट कर दिया

नीलम ने उसके अविश्वास को झुटाला दिया, कह दिया अब्बा गलती पर हैं। गुल के पास रकम नहीं। शाह ने बेटी का पक्षपात देखा तो आपे से बाहर हो गया। गुस्से में कड़क उठा।

—यह मेरी इज्जत का सवाल है। खेत में गांव वालों के सामने अपनी कीमत मैं ही अदा करूंगा। मैं गांव वालों के सामने अपना मज़ाक उड़वाना नहीं चाहता। मुझे इज्जत प्यारी है और मैं इज्जत के लिये सब कुछ करने को तैयार हूँ।

अब्बा! गुल रोते हुये बोली—इसमें गुल का क्या क़ुसूर! उसने तो अपने दोस्त की मदद की है

इस से मुझे क्या फ़ायदा। शाह ने मुँह बनाया।

—मेरी तो इज्ज़त खाक में मिल गई

प्रतिष्ठा, केवल प्रतिष्ठा, शाह को केवल इस बात का विचार था अगर उसने रुपया समय पर अदा न किया तो गांव वाले उसे समझकर उसका मज़ाक़ उड़ायेंगे। वह इलाके भर में बदनाम हो जायेगा।

बाप को इज्जत का और बेटी को प्रेम का ख्याल था। इन को किसी भी संगम पर इकट्ठा नहीं होना था नीलम फफककर रोने लगी। उसकी दुनियां। उजड़ रही थी। जीवन के अंधेरे विचारों से सिहर उठी थी वह।

शाह ने उसे रोते देखा तो डांट कर घर वापस जाने का हुक्म दिया नीलम दुपट्टे से आँसू पोंछती घर की ओर चली। पग-पग पर आंसू निकल रहे थे। पल पल दुख भरा प्रतीत हो रहा था। वह अपनी जगह बेबस थी।

बाप के बदलते इरादों का नीलम को अनुमान हो गया वह सर पीट कर रह गई। बाप और प्रीतम के बीच बहुत बड़ी खाई पैदा हो चुकी थी। जिस का भरना उसके बस में नहीं था। उसे भरने के लिये दौलत की जरूरत थी।

शाह की बातों से गुल के लिये बड़ी घृणा प्रतीत होती थी। और यह घृणा नीलम के लिए मौत का सन्देश ला रही थी। वह घर में बैठी तसल्ली देती रहती लेकिन यह ग़म का रोग जो उसे लग चुका था, दिलासा तसल्लियों से प्रभावित न होते हुये बढ़ता ही जा रहा था।

बहारों से खेलते-खेलते अचानक उसकी पतझड़ से भेंट हुई थी, खुशी के बाद फौरन दुख मिला, वह बौखला गई। यह मानव प्रकृति है कि खुशी में बीतते हुये दिनों का आभास नहीं होता। सुख के लम्बे काल छोटे और दुख का क्षण पहाड़ मालूम होते हैं।

वह तो औरत थी। रो रो कर अपना जी हलका कर लेती। लेकिन गुल की हालत उससे कहीं खराब थी। वह मर्द था, न रो सकता था न किसी से कुछ कह सकता था। अन्दर ही अन्दर घुलने लगा। वह समझ चुका था शाह की नफरत को जो उसके रूह मे समाती जा रही है।

नीलम यह जानने हुए कि उसका बाप गुल का शत्रु बन चुका है एक दिन अवसर पा कर उसके पास पहुँच गई काफी दिनों के बाद दो प्रेमियों के हृदय जब आमने सामने हुए तो गले मिल के रोये—जो मिल बैठें, दीवाने दो। दोनों ने एक दूसरे को अपनी रामकहानी सुनाई।

दुख दर्द ने दोनों को घेरे में ले रखा था। ऐसा घेरा जिससे निकलने की कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। नीलम की आखों में आंसू थे। दिल जल रहा था, तड़प रहा था।

—गुल कुछ करो, बाबा कुछ और सोच रहे हैं, कोई राह समझ में नहीं आती।

—हमारी मोहब्बत का क्या होगा गुल! नीलम ने कुछ ऐसे स्वर में कहा जैसे किसी तेज धार का भाला उसके सीने में उतार दिया हो। गुल का हृदय भी मसोस उठा। प्रयत्न करने पर भी वह आंसू न रोक सका, प्रिय उसके सामने थी। क्या करता, वह मजबूर था, बेबस था। शिकायत करे तो दोस्त की दोस्ती में अन्तर आता था। न बोले तो उसका प्रेम सन्देह में पड़ता था। झुंझला कर कहने लगा—

—नीलम कुदरत इम्तहान ले रही है।

—किसका इम्तहान?

—मेरा और तुम्हारा।

—गुल! वह हिचकियां लेने लगी—मुझमें किसी पहेली को समझने

की हिम्मत नहीं ।

—सब्र करो नीलम ! वह हाथ पकड़कर कहने लगा—देखो तो कुदरत क्या करती है ।

वह भड़क उठी—कुदरत तो हमारा तमाशा देख रही है ।

—नहीं नीलम ! गुल ने सीने से चिपका लिया ।

—ऐसा न सोचो नीलम ! कुदरत हमारी मदद जरूर करेगी । वह बरबस रोने लगी । गुल उसे सान्त्वना देता रहा । मगर अपने-आप पर काबू न पा सका । वह भी रो दिया । प्रकृति इन दोनों प्रेमियों के अलाप देख बेचैन हो उठी ।

शाह ने जागीरदार से कर्ज लेने का इरादा किया और एक दिन नहा-धोकर, उजले कपड़े पहने । जागीरदार की हवेली पहुंचा । कुछ देर बाद जागीरदार ने दीवानखाने में प्रवेश किया । शाह को देखकर आश्चर्य से पूछा—आओ शाह बाबा, यहां कैसे आना हुआ ? शाह ने हिचकिचाते हुए कहा—एक जरूरत आ पड़ी थी, इसीलिये हाजिर हुआ ।

—कहो । जागीरदार रोब से बोला ।

—बात यह है सरकार......शाह कहते-कहते रुका, हिम्मत करके बोला

—मुझे दस हजार रुपये की जरूरत है ।

—दस...हजार । जागीरदार ने दोनों शब्द दोहराये ।

—जी ! शाह अदब से बोला ।

—हूं ।

जागीरदार कुछ सोचने लगा । शाह को हौसला हुआ । अगर उसे इन्कार करना होता तो फौरन कर देता । उसकी खामोशी बता रही थी कि वह कर्ज़ा देने पर तैयार है । बस ज़रा ज़ोर देने की ज़रूरत है । कहने लगा—

—मैं जल्दी ही लौटा दूंगा ।

—वह तो कोई बात नहीं लेकिन......जागीदार ने बात अधूरी छोड़ दी ।

शाह ने तुरन्त कहा—फरमाइये ।

जागीरदार ने उसे ध्यान से देखा । पहले मुस्कराया फिर गम्भीर स्वर में कहा—इतनी दौलत है...इतने मकान हैं...मैं चाहता हूं कि इनका कोई वारिस हो...इसलिये शादी करने का इरादा है...मैं चाहता हूं आपकी बेटी...इस घर की मालकिन बन जाये ।

वस्तुत: यह एक सौदा था जो शब्दों के हेर-फेर के कारण सौदे-बाज़ी के वर्ग से बाहर था । नीलम की जवानी ने जागीरदार को मोम कर दिया था । रुपये देने के लिये यह एक तरह की शर्त थी जो ज़रा पर्दे की आड़ से शाह के सामने थी ।

शाह ने सोचा और सोचता रहा । अब दस हज़ार की बात नहीं रही जागीरदार की पूरी दौलत सामने थी । ज़ाफरान के तीन नहीं कई खेत निगाहों में घूम गये ।

शाह को निर्णय करते देर न लगी । उसने फैसला कर लिया । नीलम गुल की नहीं, जागीरदार की बीवी बनेगी । बाप-बेटी को, बेटी के प्रेम

बेटी की खुशियों को छोटी-सी दुनिया की सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर बेच रहा था। सौदा तय होने वाला था, जरा बदले हुए ढंग से।

शाह सोच रहा था। जागीरदार चुपचाप उसे देखता रहा। कुछ देर तो वह शान्त रहा, फिर पूछा—

—क्या फैसला किया आपने ?

—मुझे मन्जूर है। उसके मुह से अपने आप निकला।

झुर्रियां पड़े जागीरदार के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। रोम-रोम खिल उठा। सौदा हो गया—किसी के जीवन का, किसी की जवानी का। फ़ैसला हो गया किसी के भाग्य का, किसी की प्रीत की रीत का। कोई माने न माने, लेकिन फ़ैसला था, जिसे मनवाया जायगा जबर से, ज़ुल्म से।

शाह वापस लौटा तो बहुत खुश था। उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। तेज-तेज कदमों से घर की ओर जा रहा था। जाफ़रान के खेत, जागीरदार की दौलत, गांव वालों में इज्जत, सब सामने घूम रही थी। उसने घर आते ही नीलम को बताया तो वह सन्नाटे में आई। ज़मीन घूमती हुई जान पड़ी। उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके कानों में उबलता हुआ शीशा डाल दिया हो। सम्भव था वह ग़श खाकर औंधे मुँह गिर जाती। वह फ़र्श पर धड़ाम कर से बैठ गई। शाह खिलखिलाता हुआ घर से बाहर निकल गया।

शाह की बातों पर उसे विश्वास नहीं हो रहा था। जो कुछ बाबा कह गया है वह हो भी सकता है। चुपचाप बैठी पथराई-पथराई नजरों से वह हर चीज़ को घूर-घूर कर देख रही थी।

—यह उसके बाप का फ़ैसला था, ऐसा हो सकता है—यह विचार आते ही वह फूट-फूट कर रोने लगी।

अकेले घर में रोती रही, कोई उसे चुप कराने न आया, हिचकियां बंध गई। फ़र्श पर लेट कर दिल थामे रही। बेचैनी की हालत थी। उसका बस चलता तो सारी दुनिया का रुख मोड़ देती, बाप की बात को ठुकरा देती।

लेकिन उसका बाप वायदा करके आया था। वह अपने बाप की ज़िद को अच्छी तरह जानती थी। जो एक बार जिद में उसके मुँह से निकल गया, वही होगा। इसके लिये चाहे उसे कितना ही नुकसान क्यों न उठाना पड़े।

घबरा के उठी, जी चाहा अभी गुल के पास पहुच जाए और उसे सारी कहानी सुना दे। फिर रुक-रुक गई, बाबा जान गया तो···वह गुस्से में है। दोनों को कत्ल कर देगा। उसे अपने जीवन की चिन्ता नही थी। गुल की जिन्दगी प्यारी थी।

गुल ने सुना तो उसे काठ मार गया। वह भागता हुआ शाह के पास आया। शाह खेतों में काम कर रहा था। उसे देखते ही मुँह फेर लिया। गुल ने कांपती आवाज़ में कहा—बाबा क्या……क्या यह सच है ?

—हां, हां बिल्कुल सच। शाह ने मुँह फुलाये हुए कहा।

—नीलम की शादी…जागीरदार से…होगी। वह रुक-रुक कर बोला। लेकिन बाबा…मेरी मुहब्बत…

—मेरी इज्जत। शाह ने व्यंग किया।

गुल को जान पड़ा कहीं से आवाज़ आई है, दौलत…दौलत…

गुल ने तड़प कर दोनों हाथ कानों पर रख लिये। यह आवाज़ उसके दिल में उतरती गई। जवान, सुन्दर, खूब स्वस्थ नवयुवक ऐसे रो दिया जैसे बच्चा रो देता है। लेकिन शाह के दिल पर कोई प्रभाव न हुआ। वह इसी तरह नाक-भों चढ़ाये खड़ा रहा।

जीवन में यह पहला अवसर था, गुल किसी के सामने आंसुओं के मोतियों की लड़ियां बिखेर रहा था। शाह चुप्पी साधे था। गुल से रहा नहीं गया—शाह बाबा, दो ज़िन्दगियां तबाह हो जायेंगी।

शाह के कठोर स्वर गूँज उठे—तुम अपनी बात करो। नीलम से अब तुम्हारा कोई वास्ता नहीं रहा।

—बाबा…सिसकियों में डूबी आवाज़ से गुल ने कहा—मैं खुदकशी कर

लूंगा···मैं कहीं का नहीं रहूंगा।

—देखो गुल खां ! शाह की भारी आवाज थी—इज्जत बचाने के लिये मुझे दौलत की जरूरत है। अगर तुम मेरे लिये खेतों की कीमत दे सकते हो तो सब-कुछ मुमकिन है वरना······

शाह के वरना का कोई इलाज नहीं था। आने वाली घटनाओं की सोच से गुल थर-थर कांप रहा था। उसने नीलम से प्रेम किया था। अथाह प्रेम—जो इस जीवन में उसके हृदय से निकलना असम्भव था। वह यह अच्छी तरह जानता था। अपने-आपको खूब समझता था। नीलम के बिना उसका जीवन अधूरा था।

जब वह सर झुकाये, सिसकियां लेता हुआ, आहें भरता हुआ खेतों में वापस चला तो उसके संसार में अंधेरा हो चला था, उसकी दुनिया लुट चुकी थी। वह ऐसे चल रहा था मानो मौत के मुंह में जा रहा हो। धीमी चाल, पीला चेहरा, आंखों में उदासी शाह बाबा से मिलने से पहले उसे कुछ सीमा तक आशा थी लेकिन अब ।

शाह से मिलते ही सब आशाओं पर पानी फिर गया। उम्मीदें मिट्टी में मिल गईं। उसने साफ इंकार कर दिया था। गुल अपने बहके कदमों को संभालता अपने कुंज में आया। उसी मिट्टी के चबूतरे पर बैठ आंसू बहाने लगा। वह रातें याद आने लगीं, वही बातें याद आने लगीं जब दोनों उसी जगह बैठे प्रेम के सागर डूबे मैं इतराया करते थे। और अब वही जिसे उसको प्यार है, किसी और के पल्ले बांधी जा रही है। उसने हर सम्भव यत्नकर लिये थे लेकिन हालात अब उसके अधिकार की सीमा से बाहर जा चुके थे।

जागीरदार ने शादी की तैयारियां शुरू कीं तो नीलम सारे बन्धन तोड़ कर चोरी छुपे गुल के पास पहुंच गई। वह बाग में था। नीलम को आते देखा तो घबरा गया। खड़ा हो गया, कहने लगा

—तुम्हारी तो शादी हो रही है नीलम

नहीं गुल···वह रोती हुई कहने लगी।

—जाओ...घर वापस चली जाओ, अब तुम किसी और की अमानत हो

गुल ! वह चिल्ला पड़ी—मैं नहीं जाऊंगी

—वह फूट-फूटकर रोने लगा। गुल की अपनी हालत भी उसे कुछ भिन्न नहीं थी। वह अपने आंसू रोककर बोला—कुदरत को हमारा मिलाप मन्जूर नहीं।

—गुल अब क्या होगा। स्वर कांप रहा था—चलो गांव से भाग चलें नीलम ! गुल के स्वर में सख्ती आई—यह मेरी और तुम्हारी ही नहीं, सारे गांव की इज्जत का सवाल है। वह जो मुहब्बत करते हैं, वह जो मुहब्बत करेंगे, उन्हें दुनिया वाले जीने न देंगे। कहेंगे मुहब्बत करने वाले खानदानों की इज्जत से खेलते हैं, वह मुहब्बत नहीं करते, जजबात के हाथों बिकते हैं और इसलिये ये मुहब्बत करने वाले नहीं। हम उजड़ जायेंगे, परवाह नहीं लेकिन हमें उन हजारों तड़पने वालों का ख्याल करना है जो मुहब्बत के सहारे जी रहे हैं।

अपना सुख, अपना जीवन, अपना उजड़ता हुआ संसार देखकर भी गुल डगमगाया नहीं। वह सच्चा प्रेम करने वालों की तरह अपने कर्तव्य को पहचान रहा था। अपने प्रेम की चिता पर प्रेम-प्रतिष्ठा की स्थापना कर रहा था।

नीलम हिचकियां लेती रही—फिर क्या होगा ?

गुल धीरे से बोला—जो अल्लाह को मंजूर होगा

नीलम आंसू बहाती लौट गई। प्रेम की गागर चकनाचूर हो गई। वह बड़े दुख और शोक में घिरी थी। चारों ओर से बेकसी ने फांस लिया था। बाप के बाद गुल रह गया था और वह भी अपनी इज्ज़त के बदले नीलम के जीवन भर के लिये रोग मोल ले रहा था।

दूसरे दिन गुल को अनुभव हो गया कि नीलम तो उसकी नस-नस में समा चुकी है। वह उसे किसी और का होते नहीं देख सकता और उसे अपना बनाने के लिये रुपयों की ज़रूरत थी जो उसके पास नहीं थे। वह अब क्या करे ? उसका केवल एक उत्तर था —आत्म-हत्या—वह कांप जाता इस न री दु िया में उसका कोई सहायक नहीं, किसे बुलाए किसे आवाज दे।

वह हृदय में जलती ज्वाला की आंच को सहन न कर सका। इस संसार में उसका केवल एक नूर था वह उसीसे सहायता लेने के लिये विवश था। साहस कर पत्र लिखा।

प्यारे नूर !

सलाम कबूल हो ।

चार दिन पहले तुम्हारी इज्ज़त पर आंच आ रही थी । आज मेरी ज़िन्दगी मुझसे रूठ रही है । इज्ज़त बचाने के लिये दौलत की ज़रूरत थी । आज वही दौलत मुझे ज़रुरत का ऐहसास दिला रही है । अपनी सुखों की दुनिया को बचाने के लिये उसी चीज़ की ज़रूरत मुझे आ पड़ी है । नीलम की शादी किसी और जगह की जा रही है, सिर्फ इसलिये कि मैं उसके बाप को रकम नहीं दे सका । बताओ मैं क्या करूं

तुम्हारा बदनसीब

गुल

एक हफ्ते बाद गुल को नूर का पत्र मिला उसे आशा थी पूर्ण भरोसा था उसका दोस्त उसे परेशानी में देखकर चैन से नहीं बैठ सकता फुरती से लिफाफा खोला, बड़ी छोटी पंक्ति थी—

"आपका खत मिलने से दो रोज पहले नूर साहेब का इन्तकाल हो गया"

सहारे टूट गये, आशाओं ने मुंह मोड़ लिया, लुटिया डूब गई । एक नूर ही था जिससे उसे उम्मीद थी वह इन मुसीबतों से उसे बाहर खींच लायेगा लेकिन वह उसके दुखों को देखने से पहले ही यह दुनियां छोड़ चुका था ।

नीलम घर की चारदीवारी में क़ैद करदी गई । जागीरदार ने ब्याह का दिन निश्चित कर दिया । दोनों घरों में ढोलक पर गीत गाये जाने लगे गांव की गोरियां रात-रात भर पहाड़ी गीत अलापने लगीं ।

नीलम मजबूर व बेबस, कमर में बन्द आंसू बहाने लगी।

गुल के हृदय काघाव रसने लगा। क्या परिवर्तन था। चार दिन पहले सब कुछ था और आज कुछ नहीं। वह दिवाना हो गया। बैठे-बैठे चिल्लाने लगता नीलम......नीलम।

लोग सुनते, चुप हो जाते। दीवानगी का इलाज दौलत थी जो जागीरदार के पास थी और वह उन सिक्कों से एक नई जिन्दगी खरीद रहा था। कोई उसे टोकने वाला नहीं था। रोकने वाला नहीं था। वह धनी था दुनियां धन की गुलाम है।

गुल रातों को उठ-उठकर भागता। पागलों की तरह चिल्लाता, जब किसी तरह चैन न मिलता तो वह शाह के घर की दीवार से लगकर खड़ा हो जाता। सबकी आवाज सुनता, नीलम की आवाज सुनाई न देती जब ढोलक पर हाथ पड़ता तो उसे यूं लगता जैसे कोई उसके दिल पर घूंसा मार रहा हो। वह वहां से बेचैन होकर उलटे कदमों भाग खड़ा होता

ज्यों-ज्यों शादी के दिन क़रीब आते गये, गुल की हालत बिगड़ती गई। वह सारा दिन कुंज के उसी चबूतरे पर बैठा बेचैनी से करवटें बदलता रहता जी चाहता अपना सिर फोड़ ले वह जितना अपने आप को समझाना चाहता उतना ही बिखर जाता।

इधर नीलम परदे में बैठी आठ-आठ आंसू रोती। वह जानती थी कि गुल के दिलपर क्या बीत रही होगी। वह कितना बेचैन होगा। उसे डर भी था,

कहीं वह कुछ कर न बैठे। यह ख्याल होते ही वह मूर्छित हो जाती। बानो को गुल के पास भेजा।

बानो गुल के घर गई लेकिन गुल ने तो घर जाना ही छोड़ दिया था। घर में बैठे उसे ढोलक की थाप सुनाई देती जिसे वह सुनना नहीं चाहता। घर में ताला देखकर वह कुंज में पहुंची।

गुल चबूतरे पर लेटा हुआ था। बानो ने उसे देखा। पहली नज़र में तो उसे पहचान न सकी। बढ़ी हुई दाढ़ी, पिचके गाल, मैले-कुचैले कपड़े। बानो ने देखा, देखती ही रह गई। दिल थामकर धीरे से पुकारा

—गुल !

—हुं। वह बड़बड़ा उठा कौन···फिर बानो को पहचानकर कहने लगा।

—बानो···तुम यहां···कैसे आई हो

—नीलम ने भेजा है

—कैसी है वह ?

—बानो की आँखों में आंसू आ गये।

—हर वक्त तुम्हें याद करती है

बानो ! गुल उबल पड़ा—उससे कह देना अब याद न करे

—तुम्हें क्या हो गया है गुल ? बानो की आवाज़ भर्रा गई।

—तुमने क्या हालत बना रखी है ?

—मुहब्बत करने वाले···उसने एक आह भरी।

—आखिर में ऐसे हो ही जाते हैं

या अल्लाह ! बानो कानों पर हाथ लगाये हुए बोली

—अगर नीलम देख ले तो एक पल भी जिन्दा न रहे।

—बानो तुम्हें कसम है। गुल तड़पकर बोला— मुझसे वादा करो उससे कुछ न कहोगी। उसकी शादी हो रही है। ऐसे खुशी के मौके पर उसे कोई दुख की बात न सुनाना। अगर तुमने उससे कुछ कहा तो रोज़े-महशर मेरी देनदार होगी।

बानो को गुमान भी नहीं था, गुल की यह हालत होगी जो उसने अपनी आंख देखी। वह भी सीने में एक दिल रखती थी जो गुल के दिल की तरह धड़कता भी था। सब कुछ अनुभव भी करता था। वह अपने को रोक न सकी, रोने लगी। गुल कहने लगा—

—न रो बानो···न जा···उसे मेरा सलाम कहना

—गुल, उसने तुम्हें बुलाया है। बानो सिसक कर बोली।

—रात को घर के पिछवाड़े तुम्हारी राय देखेगी

—नहीं बानो, नहीं। वह घबरा उठा—अब···अब तो उसकी शादी हो रही है। गुल नहीं आयेगा।

—वह इन्तजार करेगी। कहकर बानो तेजी से उठी और भागती हुई बाग के बाहर चली गई।

गुल ने आवाज दी। वह रुकी नहीं। गुल पेड़ के सहारे खड़ा रहा। आंसुओं का बांध टूटा तो दामन भी भीग गया

रात हो गई, वह मछली की तरह तड़पता रहा। उठना चाहा, तो कदम ने साथ न दिया। उसे मालूम था, नीलम घर के पिछवाड़े उसकी राह देख रही होगी। वह स्वयं बेचैन था इसलिये नीलम की बेचैनी का अनुभव था लेकिन

ज़रा सी भूल—इस इज्ज़त को आसमान ज़मीन पर ला सकती थी जिसके लिये अपनी ज़िन्दगी की बाज़ी पर लगादी थी—अमूल्य बलिदान लिया था।

इसी उधेड़बुन में सुबह हो गई। सूर्य की किरणों ने सर उठाया। गुल ने संतोष की साँस ली। वह अपनी परीक्षा में सफल रहा और जब सूर्य की पहली किरण ने ज़मीन चूमा तो गुल चबूतरे से टेक लगाए आंसू बहा रहा था। नीलम ने रातभर राह देखी होगी, तड़पी होगी और इधर गुल...

वह दिन आगया जब सुबह के उजाले के साथ-साथ शहनाइयां भी बजीं, तबले पर थाप पड़ी। सारा गांव गूंज उठा। गुल ने सर पटक दिया, हृदय से निकलती आह को रोक लिया। कहीं किसी को खबर न पड़ जाये, कोई सुन न ले।

पालकी तैयार थी। बारात वापस जाने वाली थी। गुल शाह के घर के पास खड़ा दुलहन को पालकी देख रहा था। उसका दिल मचल रहा था, आंखों में आंसू तड़प रहे थे। सारे वातावरण में एक चुभन ने, एक जलन ने जन्म ले लिया था दूलिहन अपने घर को चली। बाजे बजने लगे। जागीरदार सीना ताने घोड़े पर बैठा पालकी के पीछे चला और पालकी में गुल की जिन्दगी आंसूओं में डूबी बैठी थी।

गुल ने दुलहन को देखा। लाल चुनरियों में लिपटी हुई गुड़िया। वह तुरन्त आड़ में आगया। कहीं नीलम न देख ले।

पालकी चली, गुल आगे बढ़ा, उसने भी फैसला कर लिया था—नीलम के बिना ज़िन्दगी, ज़िन्दगी नहीं, मौत है। क्यों न मौत को ही गले लगाया जाये!

वह आगे बढ़ता गया। बस्ती दूर होती गई। वीराने पास आते गये। आंखों तले अंधेरा छागया। उसके पग एक ऊंची चोटी की ओर बढ़ रहे थे। चोटी के आखिरी सिरे पर से पहुंच कर गुल ने अथाह गहराइयों पर नजर

डाली—और छलांग दी।

अंधेरे चीख़ उठे।

ठीक उसी समय पत्रवाहक गुल के नाम एक एक्सप्रैस तार लाया और खोज रहा था।

तार में लिखा था—

नूर को एक सच्चे दोस्त की जरूरत थी। आप उनके इम्तहान में पूरे उतरे हैं। मरने से पहले वह कुल अपनी जायदाद, मालीयत, बीस लाख रुपया आपके नाम कर गये हैं। आप आकर उसे सँभाल लीजिये।